यहोशू

1 याहवे ने अपने सेवक मूसा के मरने के
बाद, मूसा के सेवक यहोशू से, जो नून
का बेटा था कहा, 2 "मेरा सेवक मूसा नहीं
रहा, इसलिए तुम तैयार हो जाओ। इन सारे
लोगों के साथ यरदन नदी पार होकर उस देश
में जाओ, जिसे मैं इस्राएलियों को देना चाहता
हूँ 3 मूसा से मैंने कहा था,'जिस जगह पर
तुम अपने पैर रखोगे, वह तुम्हें मिल जाएगी।
4 जंगल और लबानोन से लेकर परात महानद
तक और सूर्यास्त की ओर महासमुद्र तक
हित्तियों का पूरा देश तुम्हारा हिस्सा ठहरेगा
5 इस दुनिया में रहते हुए कोई भी तुम्हारा
मुकाबला न कर पाएगा। जिस तरह से मैं
मूसा के साथ था, वैसे ही तुम्हारे साथ रहूँगा।
मैं तुम्हें न ही धोखा दूँगा और न छोड़ूँगा
6 इसलिए हिम्मत रखो, क्योंकि जिस देश को
देने का वायदा मैंने इन लोगों के पुरखों से
किया था, तुम्हीं उस देश को इन के लिए
जीत पाओगे। 7 साहस रखो और जो नियम
आज्ञाएँ मैंने तुम्हें अपने सेवक मूसा के द्वारा
पहुँचायी थी, उन सब का पालन करना। तुम
उस से न दाएँ, न बाएँ मुड़ना, तब जहाँ कहीं
तुम जाओ तुम्हें कामयाबी मिलेगी। 8 ये नियम
आज्ञाएँ तुम्हारे मन से दूर न होने पाएँ। तुम
रात-दिन इन्हीं पर मनन करना। इसलिए इसी
आधार पर काम करने से तुम कामयाब होने
के साथ प्रभावशाली बनोगे।' 9 क्या मैंने तुम्हें
हुक्म नहीं दिया था, "तुम्हारा हौसला बना
रहे। न तो तुम डरना और न ही तुम्हारा मन
हताश हो, क्योंकि तुम जहाँ-जहाँ जाओगे,
वहाँ-वहाँ तुम्हारे परमेश्वर तुम्हारे संग ही
रहेंगे।" 10 तब यहोशू ने प्रजा के अधिकारियों
को यह आज्ञा दी, 11 कि छावनी में जाकर
सभी लोगों को अपना-खाना तैयार करने
को कहें। ऐसा इसलिए क्योंकि तीन दिन
के अन्दर उनको इस यरदन नदी को पार
करना है, ताकि प्रतिज्ञा किए हुए देश के ऊपर
कब्ज़ा कर सकें। 12 फिर यहोशू ने रूबेनियों,
गादियों और मनश्शे के आधे कबीले के
लोगों से कहा, "जो कुछ याहवे के सेवक
मूसा ने तुम से कहा, 13 कि तुम्हारे परमेश्वर
याहवे तुम्हें आराम देते हैं, यही देश तुम्हें देंगे
उस का ख्याल रखो। 14 तुम्हारी महिलाएँ,
बच्चे और जानवर याहवे द्वारा दी गयी इसी
ज़मीन पर रहें। तुम्हारे ताकतवर लोग लाईन
लगा कर अपने भाईयों के आगे-आगे पार
उतर जाएँ और जाकर उनकी मदद करें।
15 जिस तरह का आराम तुम पा चुके हो, जब
वह वायदा किए हुए देश को अधिकार में
लेकर पा सकेंगे, तब तुम हासिल किए हुए
देश में जो याहवे के सेवक मूसा ने यर्दन नदी
के इस पार सूर्योदय की ओर से दिया है, लौट
आने पर अधिकारी हो पाओगे। 16 तब वे
बोले, "जो कुछ तुम कह रहे हो, हम करेंगे।
जहाँ कही जाने को तुम कहोगे, हम जाएँगे।
17 जिस तरह से हम मूसा की बातों को मानते
थे, वैसे ही तुम्हारी भी मानेंगे। हम केवल
यह चाहते हैं, कि जिस तरह मूसा के साथ
याहवे मौजूद थे, वैसे ही तुम्हारे साथ रहें।
18 यदि कोई व्यक्ति तुम्हारी खिलाफ़त करे

और तुम्हारी दी गयी आज्ञाओं को न माने,
तो उसे मौत के घाट उतार दिया जाए। तुम
हिम्मत न हारना और डटे रहना।”

2 तब नून के बेटे यहोशू ने दो जासूसों
को शित्तीम से चुपके से भेजा ताकि
वे छानबीन करें और यरीहो को भी देखें।
उन्होंने ऐसा ही किया और जब वहाँ पहुँचे
तो एक राहाब नामक महिला के घर पर,
जो यौन व्यापार करती थी,ठहरे। 2 तब राजा
को किसी ने यह सूचना दे दी, कि कई एक
इस्राएली देश की जासूसी करने आए हैं 3 तब
यरीहो के राजा ने राहाब को समाचार भेजा,
कि उसके यहाँ ठहरे हुए लोग देश का भेद
लेने आए हैं, उन्हें बाहर निकालो। 4 राहाब
ने इन्कार कर दिया कि उसके घर में कोई
आकर ठहरा है। उसने यह माना कि उसके
यहाँ कुछ लोग आए ज़रूर थे लेकिन वह
नहीं जानती कि वे कहाँ से आए थे। 5 सूरज
डूबते ही, फ़ाटक बन्द होते समय, वे चले
गए।वह बोली, “मुझे यह नहीं मालूम कि
कहाँ चले गए। यदि झट-पट उनका पीछा
किया जाए, तो उन्हें पकड़ा जा सकता है।“
6 राहाब ने अपने घर की छत पर रखी सनई
की लकड़ियों के बीच उन्हें छुपा दिया था
7 वे आदमी यर्दन के रास्ते चलते-चलते घाट
तक पहुँच गए। जैसे ही वे फ़ाटक से निकले,
वैसे ही फ़ाटक बन्द कर दिया गया। 8 यहाँ
राहाब की छत पर जासूस अभी लेटे भी न थे,
कि वह उनके पास गयी, 9 और कहा, “इस में
कोई शक नहीं कि याहवे ने यह देश तुम लोगों
को दे दिया है। हाँ, तुम्हारा डर हमारे मनों में
है और इस देश के वासी तुम्हारे कारण घबरा
उठे हैं। 10 क्योंकि हम ने सुना था कि मिस्र
से निकलते समय याहवे ने लाल समुन्दर के
पानी को सुखा डाला था। इतना ही नहीं तुम
लोगों ने सीहोन और आग नाम के यरदन पार
रहने वाले दोनों एमोरी राजाओं को मार डाला
था। 11 ये बातें सुन कर हम सभी हक्का-बक्का
रह गए, क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर याहवे
आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर हैं। 12 मैंने
तुम पर एहसान किया है इसलिए इस बात
का प्रण करो कि तुम मेरे पिता के परिवार
पर आँच तक नहीं आने दोगे। इस प्रतिज्ञा
का तुम मुझे सबूत भी दो। 13 यह कसम
खाओ कि मेरे माता-पिता, भाई-बहन और
उनका जो कुछ है और हम सभी सुरक्षित
रहने पाएँगे।” 14 तब वे लोग बोले, “यदि
तुम हमारी यह बात किसी को न बताओ,
तो तुम्हारी जान के बदले हमारी जान जाए।
जब याहवे हमें यह देश दे देंगे, तब तुम्हारे
साथ अच्छा और न्याय का बर्ताव करेंगे।”
15 राहाब शहरपनाह पर बने घर में ही रहा
करती थी। उसने उन जासूसों को खिड़की
से रस्सी की मदद से उतारा और नगर के
बाहर कर दिया। 16 उसने उन्हें सलाह दी,
कि वे पहाड़ पर जाकर तब तक छिपे रहें,
जब तक उनको ढूँढने वाले वापस लौट कर
न आ जाएँ। 17 उन्होंने उस से कहा कि जो
कसम उसने उन्हें खिलायी है ज़रूर उसे पूरा
करेंगे। 18 उन्होंने कहा, “जब हम यहाँ वापस
आएँगे, तब तुम इस खिड़की से लाल डोरी
लटका देना, जिस से तुमने हम को उतारा था।
हाँ अपने माता-पिता भाईयों और पिता के
पूरे परिवार को यहीं रखना। 19 उस समय जो
कोई तुम्हारे घर के दरवाज़े से बाहर निकले,
वही अपनी मौत का ज़िम्मेंदार होगा और
हम उसके ज़िम्मेंदार न ठहरेंगे। 20 लेकिन
तुम्हारे घर में रहने के बावजूद यदि कोई
नाश होता है तो उसके खून का दोष हम
पर पड़ेगा।अगर तुम हमारे बारे में किसी को
जानकारी दोगी, तो हमारी की हुई प्रतिज्ञा से

हम किसी भी तरह बन्धे न रहेंगे।" 21 वह
बोली,"ठीक है हमें यह बात मंज़ूर है।" इसके
बाद राहाब ने उन्हें विदा किया। 22 जब तक
उनका पीछा करने वाले वापस नहीं लौट
गये, तीन दिन तक वे लोग पहाड़ पर ही
रहे। उनका पीछा करने वालों ने तीन दिन
तक ढूँढ- ढाँढ की, लेकिन उनके हाथ कुछ
नहीं लगा। 23 इसलिये दोनों आदमी पहाड़
से उतर कर यर्दन नदी पार कर यहोशू के
पास आए।उन्होंने सब कुछ उसे बता दिया।
24 उन्होंने यहोशू से कहा,"इस में कोई शक
नहीं कि परमेश्वर ने उस ज़मीन को हमें दे
दिया है और वहाँ के लोग हम से डर रहे हैं
।"

3 सुबह होते ही यहोशू सब इस्राएलियों
को शित्तीम से यर्दन के किनारे लाया।
वे लोग टिक भी गए। 2 तीन दिन के बाद
अधिकारियों ने छावनी के बीच जाकर,
3 लोगों को यह आदेश दिया, "जब तुम को
अपने परमेश्वर याहवे की वाचा का बक्सा
और उसे उठाए हुए लेवीय पुरोहित भी दिखें,
तब अपनी जगह से निकल पड़ना और उसके
पीछे-पीछे चलते जाना, 4 लेकिन तुम्हारे और
बक्से के बीच में दो हज़ार हाथ की दूरी बने
रहे। तुम बक्से के पास मत जाना, ताकि तुम
देखते रहो कि किस रास्ते से तुम को चलना
है, क्योंकि अब तक तुम्हें इस रास्ते का कोई
अनुभव नहीं है।" 5 फिर यहोशू ने प्रजा से
कहा, "तुम लोग खुद को शुद्ध करो, क्योंकि
कल प्रभु परमेश्वर तुम्हारे बीच अजीब काम
करेंगे।" 6 तब याजकों से यहोशू बोला, "तुम
लोग वाचा का बक्सा उठाओ और प्रजा के
सामने चलना शुरू कर दो।" उन्होंने यहोशू के
कहने के अनुसार किया भी। 7 तब परमेश्वर
ने यहोशू से कहा, "आज के दिन से मैं
सभी इस्राएलियों के सामने तुम्हारी बड़ाई
करना आरम्भ करूँगा, जिस से उन्हें पता
चल जाएगा कि जिस तरह से मैं मूसा के
साथ था, वैसे ही तुम्हारे साथ भी हूँ। 8 तुम
वाचा के बक्से को उठाने वाले पुरोहितों से
कहना कि यरदन के पानी के किनारे पहुँचने
पर यर्दन में ही खड़े रहें।" 9 तब यहोशू ने
इस्राएलियों को प्रभु की बातें सुनाने के लिए
अपने पास बुलाया 10 यहोशू बोला, "तुम्हारे
देखते-देखते परमेश्वर कनानियों, हित्तियों,
हिव्वियों, परिज्जियों, गिगीशियों, एमोरियों
और यबूसियों को उनके देश से बाहर कर
देंगे। 11 सारी दुनिया के प्रभु की प्रतिज्ञा[a] का
बक्सा तुम्हारे आगे-आगे यरदन में जाने वाला
है। 12 इसलिए अब इस्राएल के बारह गोत्रों
में से एक-एक आदमी को लो 13 जिस पल
बक्सा उठाने वाले पुरोहितों के पैर यरदन
नदी के पानी में पड़ेंगे, उसी पल बहता पानी
रूक जाएगा।" 14 इस्राएलियों के चल पड़ने
पर पुरोहितों का झुण्ड भी बक्से को उठा
कर चल पड़ा। 15 यरदन पहुँचने पर ज्यों ही
पुरोहितों के पाँव पानी में पड़े, 16 ऊपर की
ओर से बहने वाला पानी आदाम नगर के
पास रूक कर ढेर हो गया और दीवार सा बन
गया। जो पानी अराबा के तालाब की तरफ़
बह रहा था वह पूरा सूख गया। इस तरह
इस्राएली यरीहो के सामने पार उतर सके।
17 पुरोहित लोग वाचा के बक्से को उठाए
हुए यरदन के बीचो- बीच पहुँचकर खड़े रहे
और लोग तट पर उतरते गए। इस तरह से
सभी ने किया।

4 उन सभी के वहाँ पहुँच जाने पर
परमेश्वर ने कहा, 2 "हर गोत्र के

[a] **3.11** वाचा

मुताबिक बारह आदमियों को चुन कर यह
आदेश दो, 3 "कि वे यर्दन की उस जगह,
जहाँ पुरोहितों ने अपने पाँव रखे थे, बारह
पत्थर उठा कर अपने साथ दूसरी ओर ले
चलें। उन पत्थरों को वे वहीं रहने दें जहाँ
आज रात ठहरें।" 4,5 तब यहोशू ने उन बारह
पुरुषों को बुलाया और कहा, "तुम अपने
परमेश्वर याहवे के बक्से के आगे यरदन
के बीच में जाकर इस्राएलियों के गोत्रों की
गिनती के अनुसार एक-एक पत्थर उठा कर
अपने-अपने कन्धे पर रखो, 6,7 ये पत्थर एक
यादगार के लिए होंगे। तुम्हारे बच्चों के प्रश्न
किए जाने पर तुम उन्हें यह उत्तर देना कि
यरदन का पानी याहवे की वाचा के बक्से
के सामने दो हिस्सों में बँट गया था। इस
तरह से ये पत्थर इस्राएल को हमेशा याद
दिलाएँगे।" 8 इस्राएलियों ने यहोशू के कहने
के अनुसार पत्थरों को यर्दन में से उठाया
और पहले पड़ाव में रख दिया 9 और यर्दन
के बीच जहाँ वाचा के बक्से को उठाए हुए
अपने पांव धरे थे, वहाँ बारह पत्थर खड़े
कराए, ये पत्थर आज[a] तक वहीं हैं। 10 याहवे
द्वारा यहोशू को बतायी गयी बातों का जब
तक यहोशू ने कहना समाप्त नहीं किया, तब
तक पुरोहित बक्सा उठाए यरदन नदी के
बीच खड़े रहे। 11 सब लोगों के पार कर
चुकने के बाद पुरोहित बक्से के साथ बाहर
आए 12 रूबेनी, गादी और मनश्शे के आधे
गोत्र के लोग मूसा के कहने के मुताबिक
इस्राएलियों के आगे-आगे लाईन में ही पार
चले गए। 13 चालीस हज़ार आदमी युद्ध के
हथियारों से लैस युद्ध करने के लिए याहवे के
सामने पार उतर कर यरीहो के पास अराबा में
पहुँचे। 14 उसी दिन याहवे ने सभी इस्राएलियों
के सामने यहोशू को बड़ी इज़्ज़त दी। जिस
तरह से वे लोग मूसा से डरते थे, वैसे ही
यहोशू से भी डरते रहे। 15 याहवे ने यहोशू
से कहा, "साक्षी का बक्सा उठाने वाले
पुरोहितों को आदेश दो कि यर्दन में से निकल
आएँ। 16 कि गवाही का तम्बू उठानेवाले
पुरोहितों को आदेश दे कि उरदन में से निकल
आएँ। 17 यहोशू ने वैसा ही किया 18 वाचा का
बक्सा लिए हुए पुरोहित जैसे ही बाहर आए
और उनके पैर ज़मीन पर पड़े, वैसे ही यर्दन
का पानी वापस आ गया और बहने लगा।
19 पहले महीने के दसवें दिन को प्रजा के
लोगों ने यरदन में से निकल कर यरीहो के
पूर्वी किनारे पर गिलगाल में अपने तम्बू गाड़
दिए। 20 यहोशू ने यरदन में से निकाले गए
पत्थरों को गिलगाल में खड़ा किया 21 फिर
इस्राएलियों से कहा, "भविष्य में जब तुम्हारे
नाती-पोते इन पत्थरों का मतलब पूछें तो
22 बताना कि यह इस बात की निशानी है कि
इस्राएली यरदन में सूखी ज़मीन से गुज़रे थे,
23 क्योंकि जिस तरह से परमेश्वर ने पहले
एक बार लाल समुन्दर को सुखा दिया था,
वैसे ही यरदन के साथ भी किया था 24 ताकि
इस दुनिया के सब देशों के लोग यह जान
सकें कि याहवे शक्तिमान हैं और सभी लोग
उनको इज़्ज़त दें।"

5 यरदन के पश्चिम के रहवासी एमोरियों
के राजाओं और समुन्दर के निकट रहने
वाले कनानियों को यह खबर मिल गयी कि
परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए यरदन नदी
को सुखा दिया था। इस बात से वे डर गये।
2 तभी याहवे ने यहोशू से कहा, "चकमक
की छूरियाँ बनाओ और एक बार फिर से
इस्राएलियों का खतना कर डालो।" 3 तब
यहोशू ने खलड़ियाँ नामक टीले पर उनका

[a] **4.9** पुस्तक के लिखे जाने के समय

खतना कराया। 4 इसका कारण यह था कि
लड़ाई करने लायक योद्धा जो मिस्र से निकले
थे, जंगल के रास्ते ही में मर गए थे। 5 मिस्र
से निकले पुरुषों का खतना हो चुका था,
लेकिन जो मिस्र से निकलने पर जंगल के
रास्ते में पैदा हुए थे उन में से किसी का
भी खतना नहीं हुआ था 6 इस्राएली लोग तो
चालीस साल[a] तक जंगल में भटकते रहे,
जब तक युद्ध के लायक, मिस्र से निकले
हुए लोग बर्बाद नहीं हो गए। ऐसा इसलिए
हुआ था क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा
नहीं मानी थी। 7 इसलिए याहवे ने इस बात
का प्रण किया था कि उत्तम ज़मीन जिस को
देने का उन्होंने वायदा किया था, वह उन
लोगों को नहीं मिलेगी। 8 तब खतना रहित
लोगों का खतना कराया गया और जब तक
वे स्वस्थ नहीं हुए छावनी ही में रहे। 9 तब
यहोशू से याहवे ने कहा, "तुम्हारी जो बुराई
हो रही थी, उसे मैंने आज दूर कर दिया
है। इसलिए इस जगह का नाम आज से
गिलगाल है 10 इसलिए इस्राएली गिलगाल में
तम्बू डाल कर रहते रहे। यरीहो के पास के
अराबा में पूर्णमासी की शाम को फ़सह का
त्यौहार मनाया 11 फ़सह के दूसरे दिन उन्होंने
उस देश की फ़सल में से अखमीरी रोटी और
उसी दिन से भुना हुआ दाना भी खाना शुरू
किया 12 जिस दिन से वे उस देश की उपज में
से खाने लगे, उसी दिन सुबह को मन्ना गिरना
बन्द हो गया। इसके बाद उन्हें मन्ना कभी
नहीं मिला। उस साल उन्होंने वहाँ की फ़सल
से अपना काम चलाया। 13 यरीहो के पास
ही जब यहोशू था उसने हाथ में नंगी तलवार
लिए हुए एक आदमी को सामने खड़े देखा।
यहोशू उसके पास गया और पूछा, "क्या तुम
हमारी ओर हो या हमारे दुश्मन की ओर?"
14 उस का जवाब था, "मैं याहवे की फ़ौज
का सेनाध्यक्ष हूँ।" उसी समय यहोशू मुँह
के बल ज़मीन पर गिर पड़ा और पूछा, "मेरे
लिए प्रभु की आज्ञा क्या है?" 15 वह बोला,
"अपने पाँव की जूतियों को उतार डालो,
क्योंकि जिस जगह तुम खड़े हो, वहाँ प्रभु की
मौजूदगी है।" और यहोशू ने वैसा ही किया।

6 इस्राएलियों के डर से यरीहो के सब
फ़ाटक बन्द रखे जाने लगे। इस
कारणवश लोगों का आना-जाना बन्द हो
गया । 2 फिर यहोशू से याहवे ने कहा,
"मैं यरीहो को उसके राजा सहित तुम्हारे
अधिकार में कर दूँगा, 3 तुम्हारे सभी फ़ौजियों
को बताओ कि वे नगर के चारों और चक्कर
लगा कर आएँ। ऐसा उन्हें छैः दिन तक
करना पड़ेगा 4 बक्से के आगे-आगे, जुबली
के सात नरसिंगे लिए हुए सात पुरोहित चलते
जाएँ। 5 जिस वक्त वे जुबली के नरसिंगे लम्बे
समय फूँकते रहें, तब सभी लोग नरसिंगे
की आवाज़ सुनते ही ऊँचे स्वर में खुशी
मनाएँ। इसके बाद ही नगर की शहरपनाह
जड़ से गिर जाएगी और तभी सब लोगों को
नगर में दाखिल हो जाना चाहिए।" 6 नून के
बेटे यहोशू ने पुरोहितों को बुलवाकर कहा,
"वाचा के बक्से को उठा कर सात पुरोहित
याहवे के बक्से के आगे-आगे जुबली के
सात नरसिंगे लिए हुए चलते जाएँ।" 7 उन
लोगों से उसने कहा, "आगे बढ़ो और इस
नगर का एक चक्कर लगा आओ।" तभी
हथियारबन्द आदमी लोग याहवे के बक्से
के आगे-आगे चले। 8 ये सभी निर्देष मिलने
के बाद सातों पुरोहित सातों नरसिंगे फूँकते
हुए चलते गए और याहवे की वाचा का
बक्सा उनके पीछे-पीछे था। 9 हथियारबन्द

[a] 5.6 एक लम्बे अर्से

आदमी नरसिंगे फूँकने वाले पुरोहितों के
आगे-आगे चले और पीछे वाले बक्से के
पीछे-पीछे चले। जो पीछे वाले थे, वे बक्से
के पीछे-पीछे चले। इस दौरान पुरोहित
नरसिंगा फूँकते रहे। 10 यहोशू ने लोगों को
हुक्म दिया, “जब तक मैं तुम्हें नारा मारने
का आदेश न दूँ, तब तक खामोश रहना.”
11 याहवे के बक्से को उसने नगर के चारों
तरफ़ घुमवाया और फिर छावनी में वापस
आकर रात वहीं काटी। 12 यहोशू बहुत सवेरे
उठ गया और पुरोहितों ने बक्सा उठा लिया
13 सात पुरोहित जुबली के सात नरसिंगे लिए,
सन्दूक के आगे बजाते हुए चलते गए 14 इसी
तरह दूसरे दिन एक बार नगर के चारों तरफ़
जाकर वापस छावनी लौट आए। छै दिन
तक यह सिलसिला जारी रहा। 15 सातवाँ
दिन आ गया और फिर बहुत सवेरे उठ कर
उन्होंने सात चक्कर लगाए। यही वह दिन
था जब उन्होंने सात चक्कर लगाए। 16 उनके
सातवीं बार नरसिंगा फूँकने पर, यहोशू ने
खुशी के नारे लगाने को कहा, ऐसा इसलिए
क्योंकि नगर उनके सुपुर्द परमेश्वर ने कर
दिया था । 17 यहोशू ने यह भी कहा कि, वह
नगर और उसमें की सभी चीजें परमेश्वर
ही की होंगी। जहाँ तक राहाब का प्रश्न
है, वह और उसके घर में रहने वालों का
कोई नुकसान नहीं होगा। ऐसा इसलिए होगा
क्योंकि उसने इस्राएली जासूसों को छिपाया
था। 18 जो कुछ परमेश्वर का हो जाएगा,
उस से सभी लोगों को बचना होगा, कि
कोई उसे अपने लिए ले न ले और उसकी
सज़ा सब को भुगतनी पड़े। 19 चाँदी, सोने,
पीतल और लोहे के बर्तन याहवे परमेश्वर
के भवन ही में रखे जाएँ। 20 जब लोगों ने
जयजयकार किया, पुरोहितों ने नरसिंगे फूँके,
तो शहर की चाहरदीवारी धड़ाम से गिर पड़ी
और सब ने मिल कर नगर को कब्ज़े में ले
लिया। 21 आदमियों, औरतों, जवानो, बूढ़ों,
बैलों, भेड़ों, बकरियों और गदहों को उन्होंने
तलवार से मार डाला 22 तब दोनों जासूसों ने
राहाब, उसके माता-पिता, भाईयों और उन
सभी को जो वहाँ थे, बाहर निकाल कर
छावनी के बाहर बैठाया 23 तब वे जवान
जासूस अन्दर जाकर राहाब को, उसके
माता- और भाईयो और जो रहा करते थे उन
सभी को बाहर निकालकर छावनी के बाहर
बैठा दिया। 24 इसके बाद उन्होंने नगर और
जो कुछ उसमें था आग से जला डाला। मात्र,
सोना, चाँदी, पीतल और लोहे के बर्तनों को
भण्डार गृह में रखा। 25 यहोशू ने राहाब और
उसके घर के सभी लोगों को कोई हानि न
पहुँचायी। इसलिए कि यरीहो की जासूसी
करते समय जासूसों को राहाब ने शरण दी
थी, उस का वंश आगे को इस्राएलियों में
बना रहा 26 यहोशू ने तभी यह कहा कि आगे
को जो व्यक्ति यरीहो को फिर से बनाने की
कोशिश करे वह परमेश्वर से सज़ा पाए।
उसकी नींव डालते समय उस का बड़ा बेटा
मर जाए और फ़ाटक लगवाते समय छोटा
बेटा। 27 यहोशू याहवे की उपस्थिति का
अनुभव करता रहा तथा सब जगह लोग
उसकी वाह-वाह करने लगे।

7 अलग की हुयी वस्तुओं के बारे में
यहूदा गोत्र के आकान ने, जो जेरहवंशी
जब्दी का पोता और कर्म्मी का बेटा
था, अपराध किया। उसके चोरी करने के
कारण परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड दिया
2 बेतावन से लगा हुआ बेतेल के पूरब की
ओर ऐ नामक नगर था। यहोशू के आदेश
के आधार पर कुछ आदमी वहाँ की जासूसी
करके आए। 3 लौटने के बाद उन आदमियों ने

सलाह दी कि सभी को वहाँ जाने की ज़रूरत
नहीं है। मात्र दो या तीन हज़ार पुरुष जाकर ऐ
को जीत सकते हैं। 4 इसलिए तकरीबन तीन
हज़ार लोग वहाँ गए, लेकिन ऐ के लोगों से
डर कर वापस भाग आए। 5 ऐ के रहने वालों
ने लगभग छत्तीस आदमियों को मार डाला
और अपने फ़ाटक से शबारीम तक उनका
पीछा करके तराई तक उन्हें मारते गए। इस
घटना के कारण लोगों का मन निराश हो
गया 6 तब यहोशू विलाप करते हुए इस्राएली
बुज़ुर्गो के साथ याहवे के सन्दूक के सामने
ज़मीन पर मुँह के बल गिर कर शाम तक
पड़ा रहा। 7 यहोशू ने प्रभु से सवाल किया,
"आप अपने लोगों को यर्दन पार क्यों ले आए
हैं? क्या इसलिए कि हम एमोरियों के द्वारा
बर्बाद किए जाएँ? यह हमारे लिए अच्छा
था कि हम वहीं रहते और यहाँ न आते।
8 प्रभु, हमारे लोग अपने दुश्मनों से डर कर
भाग आए हैं, अब मैं क्या करूँ? 9 कनानी
और इस देश के नागरिक हमें घेर लेंगे और
हमारा नामो-निशां इस दुनिया से मिटा देंगे।
तब आपके महान नाम की निन्दा होगी।"
10 यहोशू को याहवे ने जवाब दिया, "पहले
तो तुम उठ जाओ 11 इस्राएलियों ने मेरी बात
नहीं मानी है। जो वाचा मैंने उनके साथ
बान्धी थी, वह उन लोगों ने तोड़ डाली है।
अलग की हुयी चीजों की चोरी करके उन्होंने
अपने पास रख ली हैं। 12 इसलिए अपने
दुश्मनों का सामना इस्राएली नहीं कर पाएँगे।
वे अपने शत्रुओं से डर गए हैं और स्वयं
अर्पण की हुयी वस्तु बन गए हैं। इसलिए
यदि तुम अर्पण की हुयी चीजों को अपने
बीच से दूर नहीं करोगे तो अपने शत्रुओं से
जीत न सकोगे। 13 उठो, प्रजा के लोगों को
पवित्र करो। प्रभु का कहना है कि तुम्हारे
बीच अर्पण की वस्तुएँ हैं। जब तक उनको
अपने से दूर न करोगे, तुम अपने दुश्मनों
के सामने खड़े न हो सकोगे 14 प्रातःकाल
तुम गोत्र-गोत्र को सामने लाओगे। जिस गोत्र
को परमेश्वर पकड़ेंगे, वह एक-एक कुल
करके सामने आए। जिस कुल को परमेश्वर
पकड़ें, उसके परिवार एक-एक करके सामने
आए। 15 तब जिस व्यक्ति ने अलग की हुयी[a]
चुरायी होंगी, उस का सब कुछ आग में
जला दिया जाए। ऐसा इस कारणवश क्योंकि
उसने याहवे की वाचा का उल्लंघन किया है
और गलत काम किया है 16 बड़े सवेरे यहोशू
उठा और इस्राएलियों को गोत्र-गोत्र करके
लाया। जेरहवंशी पकड़े गए। तथा यहूदा का
गोत्र पकड़ा गया। 17 जेरहवंशी के परिवार के
एक-एक आदमी को सामने लाने पर जब्दी
पकड़ा गया। 18 तब उसने उसके परिवार के
एक-एक आदमी को समीप खड़ा किया।
ऐसा करने पर यहूदा गोत्र का आकान, जो
जेरहवंशी जब्दी का पोता और कर्मी का बेटा
था, पकड़ा गया 19 तब यहोशू ने आकान से
कहा,"हे मेरे बेटे, इस्राएल के परमेश्वर को
इज़्ज़त दो और अपना अपराध मान लो। जो
कुछ तुमने किया है वह मुझे बताओ और
कुछ भी छिपाओ मत।" 20 आकान बोला,
"हाँ मैंने इस्राएल के परमेश्वर के खिलाफ़
गुनाह किया है। 21 लूट में मुझे शिनार देश का
एक खूबसूरत ओढ़ना, दो सौ शेकेल चाँदी,
पचास शेकेल सोने की एक ईंट दिखायी दी
थी। मुझे ये चीजें अच्छी लगीं और मैंने उन्हें
रख लिया। ये सभी मेरे तम्बू में ज़मीन में गढ़ी
हैं। 22 तब यहोशू ने कुछ लोगों को भेजा,
जिन्होंने आकान द्वारा कही बातों के अनुसार
ही पाया। 23 तम्बू में से उन्हें निकालकर,
यहोशू और इस्राएलियों के पास लाया गया।

[a] **7.15** अर्पित चीजें

24 इसके बाद यहोशू आकान, उसकी चुरायी
चीजों और मवेशियों को आकोर नामक
तराई में ले गया यहोशू ने आकान से पूछा,
“हमें तुमने इतना दुख क्यों दिया है? आज
तुम्हें दुख मिलेगा।” तब इस्राएलियों ने उसे
पत्थरवाह करके आग में डाल कर जला
दिया और उन सब पर पत्थर डाल दिए।
इस तरह से याहवे का गुस्सा शान्त हुआ।
इस तराई का नाम आज तक आकोर है।
25 तब यहोशू ने कहा,“ तुमने हमें दुख दिया
है ? आजके दिन याहवे तुम्हें दुख देंगे । तब
सभी इस्राएलियों ने उसे पत्थर से मार डाला।
उसको आग से जलाकर उसके ऊपर पत्थर
डाल दिए। 26 वहाँ पत्थर का ढेर सा लग
गया, जो आज तक बना है। तब प्रभु का
भड़का गुस्सा शान्त हुआ।

8 तब याहवे ने यहोशू से कहा, “डरो मत,
कमर बान्धो और योद्धाओं को लेकर
ऐ पर हमला कर दो। मैंने ऐ के राजा को
प्रजा समेत तुम्हारे अधिकार में कर दिया
है। 2 जैसा बर्ताव तुमने यरीहो और उसके
राजा के साथ किया था, वैसा ही ऐ और
उसके राजा के साथ करना। वहाँ के जानवरों
और सामान को ले लेना। उस नगर के पीछे
की ओर अपने आदमियों को घात में लगा
दो।” 3 इसलिए यहोशू ने तैयारी की और
तीस हज़ार ताकतवर इन्सानों को चुन कर
रात ही में आज्ञा देकर भेजा 4 उनको उसने
हुक्म दिया कि वे बहुत दूर न जाएँ, लेकिन
नगर के पीछे की ओर घात लगा कर तैयार
बैठे रहें। 5 उसने कहा, “मैं अपने साथियों
के साथ उस नगर के पास आऊँगा, जब वे
हमारा मुकाबला करने को निकलें, तब हम
उनके आगे से भागेंगे। 6 वे लोग हमें डरपोक
समझ कर, हमारा पीछा करेंगे। इस तरह से
वे नगर से बहुत दूर निकल आएँगे। 7 तब तुम
उठ कर नगर पर कब्ज़ा कर लेना। तुम्हारे
परमेश्वर उन्हें तुम को दे देंगे। 8 नगर को
ले लेने के बाद उसमें आग लगा देना 9 तब
वे ऐ और बेतेल के बीच घात लगा कर बैठे
रहे। और यहोशू उस रात लोगों के बीच रहा।
10 सुबह-सुबह यहोशू ने लोगों को गिना और
इस्राएली बुज़ुर्गों के आगे-आगे ऐ की ओर
चला 11 उसके साथ के सभी योद्धा चढ़कर ऐ
नगर के पास पहुँचे और उसके सामने उत्तर
की ओर पड़ाव किया। उनके और ऐ के बीच
एक घाटी थी 12 तब उसने पाँच हज़ार लोगों
को चुन कर बेतेल और ऐ के बीच नगर की
पश्चिम की ओर उनको छिपकर हमला करने
के लिए बैठाया 13 जब लोगों ने उत्तर की
ओर पूरी फ़ौज को और उसकी पश्चिम की
ओर छिपकर आक्रमण करने वालों को भी
ठिकाने पर कर दिया, तब यहोशू उसी रात
तराई के बीच गया 14 ऐ के राजा को यह सब
मालूम हो जाने पर अपने लोगों को अराबा ले
गया ताकि इस्राएलियों से मुकाबला करे। वह
छुपे हुए आक्रमणकारियों के बारे में अनजान
था 15 तब यहोशू और इस्राएली जंगल के
रास्ते डर कर भागे 16 तब नगर के सभी
लोग इस्राएलियों का पीछा करने के लिए
बुलाए गए। उन्होंने भी यहोशू का पीछा करने
में साथ दिया। 17 सभी पुरुष ऐसा कर रहे
थे और नगर लगभग खाली हो गया 18 तब
यहोशू से याहवे ने कहा, “ऐ की ओर अपने
हाथ का भाला बढ़ाओ, क्योंकि वह तुम्हारे
अधिकार में आ जाएगा।” यहोशू ने वैसा
किया भी 19 उसी पल छुपे हुए लोगों ने तुरन्त
दौड़कर नगर को अपने वश में करके आग
लगा दी। 20 ऐ के आदमियों ने पीछे मुड़
कर देखा कि धुआँ आकाश तक जा रहा
है। वे लोग इधर उधर भाग न सके। जो

लोग जंगल की ओर भाग रहे थे वे फिर
कर अपने हमला करने वालों पर टूट पड़े।
21 यहोशू और इस्राएलियों ने यह दृश्य देखा,
तब घूम कर वे ऐ के पुरुषों को मारने लगे
22 उनका सामना करने के लिए और लोग भी
बाहर निकल आए। इसलिए वे इस्राएलियों
के बीच में फँस गए और कोई भी बच न सका
23 ऐ के राजा को ज़िन्दा पकड़ लिया गया।
24 जब इस्राएली ऐ के सभी रहने वालों को
मैदान में अर्थात् उस जंगल में जहाँ उन्होंने
उनका पीछा किया था मार चुके, तब सब
इस्राएलियों ने ऐ को लौटकर उसे भी तलवार
से मारा 25 महिलाएँ और पुरुष जिन्हें मारा
गया, तकरीबन बारह हज़ार थे 26 जब तक
यहोशू ने ऐ के सभी रहने वालों को खत्म
नहीं कर डाला, तब तक उसने उस हाथ को
पीछे न किया जिसे बच्चे के साथ बढ़ाया हुआ
था। 27 इस्राएलियों ने याहवे के उस आदेश
के कारण जो यहोशू को दिया गया था, उस
नगर के सामान और जानवरों को अपना
कर लिया। 28 इसके बाद यहोशू ने नगर को
फुँकवाया, जो कि आज तक खंडहर पड़ा
है। 29 उसने ऐ के राजा को शाम तक पेड़ पर
लटकवा रखा। सूरज डूबते-डूबते यहोशू की
आज्ञा से उस का शव पेड़ से उतारकर फ़ाटक
के सामने डाल दिया गया। बाद में उस पर
पत्थर डाल दिए गए। 30 तब परमेश्वर के
लिए यहोशू ने एक वेदी बनवायी। 31 जिस
तरह से मूसा ने इस्राएलियों को निर्देष दिए थे
और जैसा मूसा की किताब में लिखा है, उसने
एक पूरे पत्थर की वेदी बनवायी। उस पर पर
कोई औज़ार नहीं चलवाया गया था। उसी
पर उसने होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।
32 वहीं पर यहोशू ने पत्थरों पर उस किताब
की नकल करायी 33 तब देशी-परदेशी सभी
इस्राएली अपने बज़ुर्गों, अधिकारियों और
जजों के साथ याहवे के बक्से को उठाने
वाले लेवीय पुरोहितों के सामने उस बक्से के
आस-पास खड़े हो गए। कहने का मतलब
यह है कि आधे लोग गिरिज़्जीम पहाड़ के
और आधे एबाल पहाड़ के सामने खड़े रहे।
यहीं पर इस्राएलियों को आशीर्वाद दिया
जाना था 34 इसी के बाद उसने परमेश्वर
द्वारा दिए गए आशीर्वाद और सज़ा की बातें
कह सुनायीं। मूसा ने बच्चों, जवानों, बूढ़ों ,
परदेशियों, महिलाओं आदि को सब कुछ
जो परमेश्वर की ओर से था, बता दिया।
35 जितनी बातों का आदेश मूसा ने दिया
था, उनमें से कोई ऐसी बात न रह गई थी,
जिन्हें यहोशू ने सभी पुरुषों, महिलाओं और
बच्चों और उनके सात रहनेवाले परदेशियों के
सामने भी पढ़कर न सुनाया हो।

9 हित्ती, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिव्वी,
यबूसी और यर्दन के इस पार पहाड़ी
इलाके में और नीचे के भाग और लबानोन
के सामने के महासागर के तट पर रहते
थे 2 इन सभी ने एक होकर इस्राएलियों
से लड़ने की ठान ली। 3 गिबोन के लोगों
को पता लगा कि यहोशू ने यरीहो और
ऐ का क्या हाल कर डाला था, 4,5 तब
उन्होंने एक चाल खेली। उन्होंने राजदूतों
का भेष धर कर अपने गदहों पर पुराने बोरे
और पुराने फटे, सिली हुई शराब की मश्कें
लादीं। पैरों में पुरानी फटी जूतियाँ, देह पर
फटे-पुराने कपड़े पहनकर अपने साथ खाने
के लिए सूखी-फफूंदी लगी रोटी ली। 6 ये
लोग गिलगाल की छावनी में यहोशू के पास
जाकर झूठ-झूठ में कहने लगे, “हम लोग
बहुत दूर से आए हैं। इसलिए तुम हमारे साथ
एक सन्धि कर लो।” 7 इस्राएलियों ने कहा,
“क्या मालूम कि सच्चाई क्या है, फिर हम

कैसे वाचा बाँधे?” 8 वे यहोशू से बोले, “हम
तुम्हारे सेवक हैं।” यहोशू ने पूछा, “तुम लोग
हो कौन और कहाँ से आए हो?” 9 उन्होंने
कहा, “परमेश्वर का नाम सुन कर हम बहुत
दूर से आए हैं। परमेश्वर ने जो कुछ भी
मिस्र में किया, वह सब हम ने सुन रखा
है। 10 यरदन के पार रहने वाले एमोरियों के
दोनों राजाओं-हेशबोन के राजा सिहोन और
बाशान के राजा आगे से परमेश्वर ने जैसा
व्यवहार किया, यह सब हमें मालूम हुआ
है। 11 इसलिए हमारे यहाँ के बुज़ुर्गों और
नागरिकों ने कहा, “रास्ते के लिए बन्दोबस्त
करके वहाँ जाओ और कहो कि हम तुम्हारे
सेवक हैं, हमारे साथ वाचा बान्ध लो। 12 हम
ने जब अपनी यात्रा आरम्भ की थी, तब
हमारी ये रोटियाँ ताजी थीं। लेकिन अब यह
सूख चुकी हैं और इस में फफूंदी लग गयी
है। 13 ये शराब की मश्कें भी फट चुकी हैं।
हमारे कपड़े और जूतियाँ भी खराब हो गए
हैं।” 14 तब उन लोगों ने बिना परमेश्वर से
पूछे उनके खाने में से खाया 15 तब यहोशू ने
उन से मेल किया और वाचा बान्धी कि वह
उन्हें ज़िन्दा छोड़ देगा। तभी जो अधिकारी
थे उन्होंने शपथ खायी। 16 इस वाचा के
बान्धे जाने के बाद ही इस्राएलियों को मालूम
पड़ा कि वे उनके पड़ोस के रहवासी ही हैं।
17 तब इस्राएली वहाँ से निकल कर तीसरे
दिन गिबोन, कपीरा, बेरोत और किर्यत्यारीम
पहुँच गए। 18 इस्राएलियों ने उन्हें कोई
नुकसान नहीं पहुँचाया, क्योंकि मण्डली
के अधिकारियों ने उनके संग इस्राएल के
परमेश्वर याहवे की शपथ ली थी। तभी सब
लोग अधिकारियों के खिलाफ़ बुड़बुड़ाने
लगे। 19 तभी अधिकारियों ने कहा, “हम ने
तो शपथ ले ली है इसलिए उन्हें छू भी नहीं
सकते। 20 हमें उनको यों ही छोड़ देना पड़ेगा,
नहीं तो हमें परमेश्वर से सज़ा मिलेगी।”
21 इसलिए उन्हें यों ही छोड़ दिया गया और
वे लोग लकड़हारे तथा पानी भरने वाले बन
गए। 22 एक दिन यहोशू ने उन्हें बुलाया और
पूछा, “तुमने हम से यह झूठ क्यों बोला
कि तुम बहुत दूर से आए हो, जब कि
तुम यही रहते हो? 23 इसलिए अब तुम्हारे
ऊपर यह सज़ा है कि तुम सभी परमेश्वर
के भवन के लिए लकड़ी काटने वाले और
पानी भरने वाले होगे।” 24 इन लोगों ने उत्तर
में कहा, “हमें यह बताया गया था कि आपके
परमेश्वर याहवे ने मूसा से वायदा किया था
कि वह तमाम लोगों को बर्बाद करके सारा
देश दे देंगे। इसी डर से हम ने तुम लोगों से
झूठ बोला 25 हम लोग तुम्हारे अधिकार में
हैं, जैसा तुम्हें अच्छा लगे तुम करो।” 26 तब
यहोशू ने उनके साथ वैसा ही किया अर्थात्
इस्राएलियों को उन पर हमला करने से रोक
लिया 27 लेकिन यहोशू ने उस दिन लोगों को
वेदी के लिए लकड़ी लाने और पानी भरने
का काम दिया .

10 यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक को
यह मालूम पड़ गया कि यहोशू ने ऐ
को बर्बाद कर डाला है और कब्ज़ा भी कर
लिया है। यह भी कि जैसा यरीहो और उसके
बादशाह से किया गया वैसा ही ऐ और उसके
राजा के साथ किया है। उनको यह जानकारी
भी मिली कि गिबोनवासियों और इस्राएलियों
के साथ मेल हो चुका है और वे लोग उनके
साथ ही रहने लगे हैं। 2 इस कारणवश उनके
मन में डर समा गया, क्योंकि गिबोन ऐ की
तुलना में काफी बड़ा था और उसके निवासी
ताकतवर थे। 3 इसलिए यरूशलेम के राजा
अदोनीसेदेक ने हेब्रोन के राजा होहाम, यर्मूत
के राजा पिराम, लाकीश के राजा यापी और

एग्लोन के राजा दबीर को यह समाचार दिया,
4 “मेरे पास आकर मेरी मदद करो, ताकि
हम मिल कर गिबोन पर हमला करें। वह
यहोशू और इस्राएलियों से मिल गया है।”
5 इसलिए यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत, लाकीश
और एग्लोन के पाँचों एमोरी राजाओं ने
अपनी फ़ौज को तैयार करके हमला बोल
दिया 6 परिणामस्वरूप गिबोन के रहने वालों
ने गिलगाल की छावनी में यहोशू को यह
समाचार भेजा, “जल्दी से आओ और हम
को बचा लो, हमारी मदद करो क्योंकि पहाड़
पर रहने वाले एमोरियों के सभी राजा हमारे
खिलाफ़ इकट्ठे हो गए हैं।” 7 यह समाचार
मिलते ही यहोशू सारे फ़ौजियों और सभी
ताकतवर आदमियों को लेकर गिलगाल से
चल पड़ा। 8 याहवे ने यहोशू से कहा, “तुम
उन से डरना मत, मैंने उन्हें तुम्हारे वश में
कर दिया है। तुम्हारे सामने एक आदमी भी
खड़ा न हो सकेगा।” 9 तब रातों-रात यहोशू
गिलगाल से जाकर उन पर टूट पड़ा। 10 वे
लोग इस्राएलियों से घबरा गए और गिबोन
के पास बड़ी संख्या में उन्हें मारा। गिबोन की
चढ़ाई पर उनका उन्होंने पीछा किया, तथा
अजेका और मक्केदा तक उन्हें मारते गए।
11 जब वे इस्राएलियों के सामने से भागे और
बेथोरोन के उतार तक आए। उनके अजेका
पहुँचने तक याहवे ने आकाश से बड़े-बड़े
पत्थर[a] उन पर बरसा दिये। इस तरह से
ओलों से मारे हुए लोगों की संख्या तलवार
से मारे जाने वालों की संख्या से ज़्यादा थी
12 इस्राएलियों की पूरी जीत के दिन यहोशू ने
इस्राएलियों के सामने ही याहवे से कहा, “हे
सूरज, तुम गिबोन पर, हे चाँद तुम अय्यालोन
की तराई के ऊपर रूके रहना।” 13 और ऐसा
तब तक था, जब तक उन लोगों ने अपने
दुश्मनों से बदला न ले लिया। क्या इस घटना
के विषय में याशार की किताब में वर्णन नहीं
है कि सूरज आकाश के बीचो-बीच ठहरा
रहा और चार पहर तक डूबा नहीं? 14 इसके
पहले ऐसी घटना के बारे में किसी ने न
सुना था, न उसके बाद, कि परमेश्वर ने
किसी व्यक्ति की सुन कर ऐसा काम किया
हो। याहवे इस्राएल की ओर से युद्ध में लड़ा
करते थे। 15 इस जीत के बाद यहोशू वापस
गिलगाल में छावनी आ गया। 16 वे पाँचों
राजा डर के मारे मक्केदा के पास की गुफ़ा में
छिप गए। 17 यह सूचना यहोशू को भी मिल
गयी 18 यहोशू के निर्देष थे, “गुफ़ा के मुँह पर
बड़े बड़े पत्थर लुढ़का कर देख-रेख के लिए
लोगों को तैनात कर दो। 19 तुम लोग ठहरो
मत, दुश्मन का पीछा करके जितनों को मार
सको, मार डालो। उन्हें यह मौका ही न दो
कि वे अपने नगर में दाखिल हो सकें। वे लोग
तुम्हारे हाथ में आ ही चुके हैं।” 20 काफी
लोगों को तो समाप्त कर दिया गया लेकिन
उन में से कुछ बच निकले और अपने नगर में
चले गए 21 तब सभी लोग मक्केदा की छावनी,
जहाँ यहोशू था, चले आए। किसी की हिम्मत
न हुयी कि इस्राएलियों के खिलाफ़ जीभ
तक हिलाता 22 तब यहोशू ने आदेश दिया,
“गुफ़ा का मुँह खोलो और उन राजाओं को
बाहर निकालो। 23 तब उन राजाओं को बाहर
निकाल कर यहोशू के पास लाया गया 24 तब
यहोशू ने योद्धाओं के प्रधानों से कहा, “पास
में आकर अपने पाँव इन राजाओं की गर्दन
पर रख दो 25 डरना नहीं और न निराश होना
क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे उन सभी दुश्मनों
का यह हाल कर देंगे।” 26 यह कहने के
बाद यहोशू ने उन राजाओं को पेड़ों पर
लटका दिया 27 सूरज डूबने से पहले उनकी

[a] **10.11** ओले

लाशों को उसी गुफ़ा में डाल दिया गया,
जिस में वे छुपे थे। बाद में इस गुफ़ा के
मुँह पर पत्थर लगा दिए गए। 28 उसी दिन
मक्केदा को हथिया लिया और राजा सहित
सभी को मार डाला गया, जैसा व्यवहार
उसने यरीहो के राजा से किया था, वैसा ही
मक्केदा के राजा के साथ किया। 29 इसके
बाद यहोशू इस्राएलियों सहित मक्केदा से
लिब्ना को गया और उन से लड़ा 30 वहाँ
का राजा भी इस्राएलियों के वश में आ गया
तथा राजा सहित सभी लोगों को मौत के
घाट उतार दिया गया 31,32 फिर यहोशू अपने
लोगों के साथ लाकीश गया और लिब्ना
की तरह सर्वनाश कर डाला 33 तब गेजेर
का बादशाह होराम लाकीश की मदद करने
आया, लेकिन यहोशू ने उसकी भी जमकर
पिटाई कर डाली। वह और उसकी प्रजा
दोनों ही चल बसे। 34 फिर यहोशू इस्राएलियों
के साथ एग्लोन आया और वहाँ छावनी
डाली। 35 उसी दिन उन्होंने उस पर कब्ज़ा
जमा लिया और तलवार चलायी। एग्लोन
के साथ उसने वैसा किया जैसा लाकीश
के साथ किया था। 36,37 फिर यहोशू लड़ने
के लिए हेब्रोन गया। वहाँ भी उसने वही
किया जो इसके पहले दूसरे नगरों के साथ
किया था। 38,39 दबीर जाकर भी यहोशू और
इस्राएलियों ने वैसा किया 40 इस्राएल के
परमेश्वर याहवे के इशारे पर यहोशू और
इस्राएल ने पर्वतीय इलाके, दक्षिण हिस्से,
नीचे के भाग, ढालू भाग, सभी के राजाओं
और लोगों को तहस-नहस कर डाला 41 यही
हाल उसने कादेशबर्ने से अज्जा और गिबोन
तक के गोशेन देश के लोगों का किया 42 एक
वक्त में ही राजाओं को देशों सहित यहोशू
ने ले लिया, क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर
याहवे इस्राएलियों के पक्ष में थे। 43 अन्त में
सभी इस्राएलियों के साथ यहोशू गिलगाल
की छावनी में वापस आ गया।

11 इन घटनाओं की जानकारी मिलने
पर हासोर के राजा याबीन ने मादोन
के राजा योबाब, शिम्रोन और अक्शाप
के राजाओं, 2 उत्तर के पहाड़ी इलाके के
राजाओं, किन्नेरेत के दक्षिण के अराबा में,
पश्चिम में ऊँचे देश में रहने वाले, नीचे के
देश में, 3 पूर्व-पश्चिम के रहवासी कनानियों,
एमोरियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों और
मिस्पा में हेर्मोन पर्वत के नीचे रहने वाले
हिव्वियों को बुलवाया 4 जो बालू की रेत के
किनकों के समान अनगिनित फ़ौजी, घोड़ों
और रथों के साथ आए 5 इस्राएलियों से
लड़ने के लिए, मेराम नामक ताल के पास
इन लोगों ने छावनी बनायी। 6 तब यहोशू
को याहवे का यह संदेश मिला, “इसी वक्त
कल मैं इन सभी को तुम्हारे वश में कर दूँगा
और वे मारे जाएँगे। तुम उनके घोड़ों की नस
कटवाना तथा रथ भस्म कर डालना 7 अपने
फ़ौजी साथियों के साथ यहोशू ने मेरोम
नामक तालाब के पास अचानक हमला बोल
दिया 8 याहवे ने उन्हें सचमुच इस्राएलियों
के हवाले कर दिया। लोग मारे गए। बड़े
नगर सिदोन और मिस्रपोत-मेम तक, पूरब
दिशा में मिस्पा के मैदान तक पीछा करके
उन्हें मारा। 9 याहवे के आदेश के मुताबिक
यहोशू ने उनके साथ किया 10 फिर यहोशू ने
हासोर के राजा का कत्ल पहले किया और
उस नगर पर कब्ज़ा जमा लिया 11 वहाँ के
सभी लोगों को भी जान गवाँनी पड़ी। नगर में
आग भी लगवा दी गयी। 12 इस तरह से सभी
नगरों को यहोशू ने राजाओं सहित ले लिया।
13 हासोर को छोड़कर किसी और नगर को
यहोशू ने जलवाया नहीं। 14 इन जगहों के

जानवरों और वस्तुओं को उन्होंने ज़ब्त कर
लिया। 15 जैसा याहवे ने यहोशू से करने के
लिए कहा था, उसने किया। 16 तब यहोशू
ने पहाड़ी हिस्से, सारे दक्षिणी हिस्से, पूरे
गोशेन देश, नीचे के देश, अराबा, इस्राएल
के पहाड़ी देश और उसके नीचे वाले देश
को, 17 हालाक नामक पहाड़ से बालगाद
तक जितने मुल्क हैं सभी पर जीत हासिल
की और राजाओं को जान से मार डाला।
18 इन सभी के युद्ध करते-करते, यहोशू का
बहुत समय बीत गया। 19 गिबोन के रहने
वाले लोगों के अलावा और किसी नगर
के निवासियों ने इस्राएलियों से दोस्ती न
की। इस्राएलियो ने धीरे-धीरे सभी नगरों पर
जय पा ली। 20 याहवे की इच्छा के अनुसार
उन्होंने किसी पर तरस नहीं खाया। इस
वजह से उनके मन इतने सख्त कर दिए गए
कि उन्होंने इस्राएल का जंग में मुकाबला
किया। 21 तभी यहोशू हेब्रोन, दबीर अनाब
वरन् यहूदा तथा इस्राएल के पहाड़ी इलाकों
में रहने वाले अनाकियों को बर्बाद दिया
22 इस्राएलियों के क्षेत्र में एक भी अनाकी न
बचा। केवल अज्जा, गत और अश्दोद में
कुछ रह गए। 23 यहोशू ने यह सब इस्राएल
को गोत्रों और कुलों के आधार पर बाँट कर
उन्हें दे दिया। इस तरह लड़ाइयों से देश को
मुक्ति मिली।

12 यरदन के पार जहाँ से सूरज उगता है
अर्थात् अर्तीन नाले से लेकर हेर्मोन
पहाड़ तक के देश और सभी पूर्वी अराबा
के जिन राजाओं को मार कर इस्राएलियों
ने उनकी ज़मीन को अपने कब्ज़े में कर
लिया था, ये हैं : 2 एमोरियों का हेशबोनवासी
राजा सिहोन आधे गिलाद पर 3 और किन्नेरेत
नामक तालाब से लेकर बेत्यशीमोत से होकर
अराबा के ताल तक जो खारा ताल भी
कहलाता है पूर्व की ओर के अराबा और
दक्षिण की ओर पिसगा की सलामी के नीचे
के भाग पर शासन करता था। 4 फिर बचे
हुए रपाईयों में से बाशान के राजा आगे का
देश था, जो अश्तारोत और एद्रेई में रहता
था 5 हेर्मोन पहाड़ सलका और मशूरियों और
माकियों के सिवाने तक कुल बाशान में और
हेशबोन के राजा सीहोन के सिवाने तक आधे
गिलाद में भी राज्य करता था 6 इस्राएलियों
और मूसा ने काफ़ी पहले इन को मार लिया
था। मूसा ने इन का देश रूबेनियों, गादियों
और मनश्शे के आधे गोत्र को दे दिया 7 और
यर्दन के पश्चिम की तरफ़ लबानोन के मैदान
में बालगात से लेकर सेईर की चढ़ाई के
हालाक पहाड़ तक के देश में जिन राजाओं
को यहोशू और इस्राएलियों ने नाश करके
उनकी ज़मीन को लेकर गोत्रों और कुलों में
बाँटा था, वे ये हैं: 8 हित्ती, एमोरी, कनानी,
परिज्जी, हिव्वी, यबूसी, जो पर्वतीय इलाके
में हैं और नीचे के देश में, अराबा में, ढालू
इलाके में, जंगल में और दक्षिण देश में रहते
थे 9 एक यरीहो का राजा, दूसरा बेतेल के
पास का ऐ का राजा, 10 एक यरूशलेम के,
दूसरा हेब्रोन का, 11 एक यर्मूत का राजा,
दूसरा लाकीश का, 12 एक एग्लोन का राजा,
एक गेजेर का, 13 एक दबीर का ओर एक
गेदेर का, 14 एक होर्मा का, एक अराद का
राजा, 15 एक लिब्ना का, एक अदुल्लाम का,
16 एक मक्केदा का, एक बेतेल का, 17 एक
तप्पूह का, एक हेपेर का, 18 एक अपेक का,
एक लश्शारोन का, 19 एक मादोन का एक
हासोर का, 20 एक शिम्रोन्मरोन का राजा,
एक अक्षाप का, 21 एक तानाक का, एक
मगिद्दो का 22 एक केदेश और एक कर्मेल के
योकनाम का राजा 23 एक दोर नामक ऊँचे

देश में दोर का राजा और एक गिलगाल के
गोयीम का 24 एक तिर्सा का राजा भी था।
कुल मिला कर इकतीस राजा हुए।

13 यहोशू की उम्र काफी हो चुकी थी
और याहवे ने उस से कहा, “तुम
बहुत बूढ़े हो गए हो, लेकिन अभी भी
बहुत से देश हैं, जो इस्राएल के अधिकार
में नहीं हैं। 2 पलिश्तियों का पूरा प्रान्त
और सभी गशूरी, 3 मिस्र के आगे शीहोर
से लेकर उत्तर की ओर एक्रोन की सीमा
तक जो कनानियों का हिस्सा माना जाता है।
पलिश्तियों के पाँचों सरदार अर्थात् अज्जा,
अश्दोद, अश्कलोन, गत और एक्रोन के
लोग और दक्षिणी ओर अव्वी भी 4 अपेक
और अमोरियों की सीमाओं तक कनानियों
का सारा देश और सिदोनियों का मारा
नाम देश, 5 गवालियों का देश, सूर्योदय की
तरफ़ हेर्मोन पहाड़ के नीचे के बालगाद से
लेकर हमात की घाटी तक सारा लबानोन,
6 लबानोन से शुरू करके मिस्रपोत-मैम तक
सिदोनियों के पहाड़ी इलाके के निवासी इन
सभी को मैं निकाल दूँगा। जैसा मेरा आदेश
है वैसा ही तुम करना : चिट्ठी डाल कर
बाँट देना। 7 इसलिए तुम इस देश को नौ
गोत्रों और मनश्शे के आधे गोत्र को उनका
हिस्सा होने के लिए बाँट दो। 8 इसके साथ
रूबेनियों और गादियों को वह हिस्सा मिल
चुका था, जिसे मूसा ने उन्हें यरदन के पूरब
की दिशा में दिया था 9 अर्थात् अर्नोन नाम
के नाले के किनारे के अरोएर से लेकर, उसी
नाले के बीच के नगर को छोड़कर दीबोन
तक मेदबा के पास का सारा चौरस देश
10 और अम्मोनियों की सीमा तक हेशबोन
में शासन करने वाले एमोरियों के राजा
सीहोन के सारे नगर 11 गिलाद देश, मशूरियों
और माकावासियों की सरहद, पूरा हेर्मोन
पहाड़ और सल्का तक पूरा बाशान 12 फिर
अश्तारोत और एद्रेई में राज्य करने वाले उस
आगे का पूरा राज्य जो रपाईयों में से शेष
बच गया था। इन्हीं को मूसा ने मारा था और
लोगों को देश से निकाल दिया था 13 लेकिन
इस्राएलियों ने गशूरियों और माकियों को
उनके देश से बाहर नहीं किया। इस वजह
से ये लोग आज तक इन के साथ-साथ
रहते रहे हैं। 14 लेवी के गोत्रियों को कोई
ज़मीन नहीं दी गयी थी। क्योंकि याहवे
परमेश्वर की ओर से यह ठहराया गया
था कि बलिदान की हुयी चीजें उनका भाग
ठहरेंगी। 15 रूबेन के गोत्र को मूसा ने उनके
कुलों के अनुसार दिया था। 16 अर्थात् अर्नोन
नाम, नाले के किनारे के अरोएर से लेकर
उसी नाले के बीच के नगर को छोड़कर
मेदबा के पास का सम्पूर्ण चौरस देश;
17 फिर चौरस देश का हेशबोन और उसके
सभी गाँव, दीबोन, बामोतवाल, बेतबाल्मोन
18 यहसा, कदेमोत, मेपात, 19 किर्यातैम,
सिबमा, तराई के पहाड़ पर बसा हुआ सेरेथ
शहर 20 बेतपोर, पिसगा की सलामी और
बेत्यशीमोत 21 चौरस देश में बसे हुए हेशबोन
में राज्य करने वाले एमोरियों के उस राजा
सीहोन के राज्य के कुल नगर जिन्हें मूसा ने
मार डाला था। मूसा ने एवी, रेकेम, सूर, हूर
और रेबा नामक मिद्यान के प्रधानों की भी
जान ले ली थी, जो सीहोन के ठहराए हाकिम
और उसी देश के रहवासी थे। 22 इस्राएली
लोगों ने उनके और मारे गए लोगों के साथ
बोर के बेटे भविष्य बताने वाले बिलाम को
भी मौत के घाट उतार दिया 23 रूबेनियों की
सीमा उनके कुलों के अनुसार नगरों और
गाँवों समेत यही रहा 24 फिर मूसा ने गाद
के गोत्रियों को कुलों के मुताबिक उनका

अपना हिस्सा ठहराकर बाँट दिया 25 तब
याजेर आदि गिलाद के नगर, रब्बा के सामने
के अरोएर तक अम्मोनियों का आधा मुल्क,
26 और हेशबोन से रामतमिस्पे और बतोनीम
तक और महनैम से दबीर की सीमा तक,
27 तराई में बेथारम, बेत्रिम्रा, सुक्कोत और
सापोन और हेशबोन के राजा सीहोन के राज्य
के शेष हिस्से और किन्नेरेत नामक तालाब
के मुहाने तक, यर्दन के पूरब की तरफ़ का
वह देश जिस की सरहद यर्दन है। 28 गादियों
का हिस्सा उनके कुलों के मुताबिक नगरों
और गाँवों सहित यही हुए। 29 फिर मूसा ने
मनश्शे के आधे गोत्रियों को भी उनका अपना
भाग कर दिया। वह मनश्शेइयों के आगे गोत्र
का निज भाग उनके कुलों के हिसाब से
हुआ 30 वह यह है अर्थात् महेनेम से शुरू
होकर बाशान के राजा आगे के राज्य का
पूरा देश और बाशान में बसी हुयी याईर की
साठ बस्तियाँ, 31 गिलाद का आधा हिस्सा,
अश्तारोत और एद्रेई जो बाशान में आगे के
राज्य के नगर थे, ये सभी मनश्शे के बेटे
माकीर के वंश का, अर्थात् माकीर के आधे
वंश का निज भाग कुलों के अनुसार ठहरे।
32 जो हिस्सा मूसा ने मोआब के अराबा में
यरीहो के पास से यर्दन के पूरब की ओर बाँट
दिए वे यही हैं। 33 लेकिन लेवी के गोत्र को
मूसा ने कुछ भी नहीं दिया। स्वयं इस्राएल के
परमेश्वर उनका हिस्सा थे।

14 जो हिस्से इस्राएलियों ने कनान देश
में हासिल किए, इन्हें एलीआजार
पुरोहित, यहोशू और इस्राएली गोत्रों के
पूर्वजों के परिवारों के खास-खास पुरुषों ने
उन्हें दिया था 2 ये हिस्से चिट्ठी डाल कर दिए
गए थे। 3 मूसा ने ढाई गोत्रों के हिस्से को
यरदन के पार दिया था। लेवियों को कुछ
भूमि भी नहीं दी गयी थी। 4 यूसुफ़ के वंश
के दो गोत्र हो चुके थे। ये थे मनश्शे और
एप्रैम। लेवियों को रहने के लिए नगर और
जानवरों के चराने के लिए चरागाह। 5 याहवे
के कहने के अनुसार इस्राएलियों ने ज़मीन
बाँट ली थी। 6 गिलगाल में यहूदी यहोशू के
पास आए। कनज़ी यपुन्ने के बेटे कालेब ने
कहा, “कादेशबर्ने में परमेश्वर ने मूसा से
तुम्हारे और मेरे बारे में क्या कहा था, याद
करे। 7 जब मुझे इस देश की जासूसी करने
के लिए भेजा गया था, तब मेरी उम्र चालीस
साल थी। मैंने ईमानदारी से रिपोर्ट दी थी।
8 मेरे साथ आए हुए लोगों ने प्रजा के लोगों
को निराश कर दिया था, लेकिन मैं परमेश्वर
के प्रति आज्ञाकारी बना रहा। 9 उसी दिन
मूसा ने कसम खा कर कहा, “तुमने पूरे मन
से परमेश्वर की बातों को माना है, इसलिए
जिस ज़मीन पर तुमने पैर रखे हैं, वह तुम्हारे
और तुम्हारे वंश की हो जाएगी। 10 और अब
देखो, जब से याहवे ने ये बातें मूसा से कहीं
थीं, 11 उन शब्दों के कहे जाने के समय से
पैंतालीस साल हो चुके है। अभी मैं ज़िन्दा
हूँ और पचासी साल का हूँ। मूसा द्वारा मुझे
भेजे जाने के समय मुझ में जितनी ताकत थी,
आज भी है। फ़ौज में काम करने की शक्ति
मुझ में जितनी उस समय थी, आज भी है।
12 इसलिए जिस पहाड़ी की चर्चा परमेश्वर
ने उस समय की थी, वह मुझे दे दो। उसमें
अनाकवंशी रहते हैं और नगर भी मज़बूत हैं।
संभव है कि मैं उन्हें देश से निकाल दूँ। 13 तब
यहोशू ने उसे आशीर्वाद दिया और हेब्रोन को
कालेब को दे दिया। 14 इसलिए आज तक
वह उसी का रहा है, क्योंकि वह इस्राएल
के परमेश्वर की सभी बातों को मानता था।

15 हेब्रोन का नाम पहले किर्यतर्बा था। वह
अर्बा अनाकियों में सब से बड़ा आदमी था।
इस देश को भी युद्ध से राहत मिली।

15 यहूदियों के गोत्र का हिस्सा उनके
कुलों के अनुसार चिट्ठी डालने से
एदोम की सरहद तक और दक्षिण की ओर
सीन के जंगल तक जो दक्षिणी सीमा पर
है, ठहरा 2 उन के हिस्से की दक्षिणी सीमा
खारे ताल के दूसरे सिरे वाले कोल से शुरू
हुयी, जो दक्षिण की ओर बढ़ी है। 3 वह
अक्रब्बीम नाम चढ़ाई की दक्षिणी ओर से
निकल कर सीन होते हुए कादेशबर्ने के
दक्षिण की ओर चढ़ गयी। उसके बाद हेस्त्रोन
के पास होकर अद्दार को चढ़कर कीआ
की ओर मुड़ गयी। 4 वहाँ से अम्मोन होते
हुए वह मिस्र के नाले पर निकली और उस
सीमा का अन्त समुन्दर है। तुम लोगों की
दक्षिणी सीमा यही होगी। 5 फिर पूर्वी सीमा
यरदन के मुहाने तक खारा ताल तक ठहरायी
गयी, उत्तर दिशा की सीमा यरदन के मुहाने
के पास के ताल के कोल से शुरू होकर
6 बेयोग्ला को चढ़ते हुए बेतराबा के उत्तर की
ओर होकर रूबेनी बोहन वाले नाम पत्थर
पर चढ़ गयी। 7 वही सीमा आकोर नामक
तराई से दबीर की ओर चढ़ा हुयी है। उत्तर
होते हुए वह गिलगाल की झुकी है जो नाले
की दक्खिन ओर की अदुम्मीम के चढ़ाव के
सामने है। वहाँ से वह एनशेमेश नाम सोते के
पास पहुँचकर एनरोगेल पर निकली। 8 फिर
वही सीमा हिन्नोम की तराई से होकर यबूसी[a]
के दक्षिण भाग से चढ़ते हुए उस पहाड़ की
चोटी पर पहुँची, जो पश्चिम की ओर हिन्नोम
की तराई के सामने और रपाईम की तराई
के उत्तर वाले सिरे पर है। 9 फिर वही सीमा
उस पहाड़ के शिखर से नेप्तोह नामक सोते
तक चली गयी और एप्रोन पहाड़ के नगरों
में निकली, फिर वहाँ से बाला को पहुँची
10 फिर वह बाला से पश्चिम की ओर मुड़
कर सेईर पहाड़ तक पहुँची। और यारीम
पहाड़ उसकी उत्तर वाली अलंग से होकर
बेतशेमेश को उतर गयी और वहाँ से तिम्ना
को निकली 11 वहाँ से वह सिवाना एक्रोन की
उत्तरी अलग के पास होते हुए शिक्कोरोन पहुँची
और बाला पहाड़ होकर यब्नेल पर निकली।
उस सिवाने का अन्त समुन्दर का किनारा
था। 12 पश्चिम का सिवाना महासमुन्दर का
किनारा रहा। यहूदियों को जो हिस्सा, उनके
कुलों के आधार पर मिला, उसकी चारों ओर
का सिवाना हो गया 13 कालेब को यहूदियों
के बीच हिस्सा दिया गया, अर्थात् किर्यतर्बा
जो हेब्रोन ही है। 14 वहाँ से कालेब ने शेशै,
अहीमन और तल्मै नाम के अनाक के तीनों
बेटों को निकाल दिया 15 वहाँ से वह दबीर
के निवासियों पर चढ़ गया 16 कालेब बोला,
“जो कोई दबीर को नाश कर पाएगा, उसकी
शादी मैं अपनी बेटी से करा दूँगा। 17 कालेब
के भाई ओत्नीएल कनजी ने उसे ले लिया
और इसलिए यहोशू की बेटी अकसा उसे दे
दी गयी। 18 कनजी ने अकसा को कहा कि
वह अपने पिता यहोशू से कुछ ज़मीन मांगे।
कालेब ने उस से पूछा कि वह चाहती क्या
है। 19 उसने कहा, “मुझे आशीर्वाद दें। आपने
मुझे दक्षिण देश में कुछ ज़मीन दी है। मुझे
न पानी के सोते भी चाहिए।” तब यहोशू ने
अपनी बेटी को ऊपर और नीचे के सोते दे
दिए। 20 यहूदियों के गोत्र का हिस्सा इस तरह
था. 21 यहूदियों के गोत्र के किनारे वाले नगर
दक्षिण देश में एदोम की सीमा की ओर ये
हैं, अर्थात, कबसेल, एदेर, भागूर, 22 कीना,
दीमोना, अदादा, 23 केदेश, हासोर, मित्नान

[a] **15.8** यरूशलेम

24 जीप, तेलेम, बालोत, 25 हासोर्हदत्ता दत्ता,
करिय्योतथेस्त्रोन[a], 26 और अमाम, शमा,
मोलादा, 27 हसर्गद्दा, हेशमोन, बेत्पालेत,
28 हसर्शूआल, बेर्शेबा, बिज्योत्या, 29 बाला,
इय्यीम, एसेम, 30 एलतोलद, कसील, होर्मा,
31 सिकलग, मदमन्ना, सनसन्ना 32 लबाओत,
शिल्हीम, ऐन और रिम्मोत। इन उन्नीस नगर
के गाँव भी शामिल हैं। 33 नीचे वाले हिस्से
में ये हैं : अर्थात् एशताओल सोरा, अशना,
34 जानोह, एनगन्नीम, तप्पूह, एनाम 35 यर्मूत,
अदुल्लाम, सोको, अजेका 36 शारैम, अदीतैम,
गदेरा और गदेरोतैम। कुल मिला कर ये
चौदह नगर है और साथ में इन के गाँव भी
37 सनान, हदाशा, मिगदलगाद, 38 दिलान,
मिस्पे, योक्तेल 39 लाकीश, बोस्कत, एग्लोन,
40 कब्बोन, लहमास, कित्लीश 41 गेदोरेत,
बेतदागोन, नामा और मक्केदा। ये नगर सोलह
थे और तमाम गाँव भी 42 लिब्ना, ऐतेर और
आशान 43 यिप्ताह, अशना, नसीब 44 कीला,
अकजीब और मारेशा ये नौ नगर और इन
के गाँव 45 नगरों और गाँवों सहित एक्रोन
46 एक्रोन से लेकर समुन्दर तक, अपने-अपने
गाँव सहित जितने नगर अश्दोद की अलग
पर हैं। 47 फिर अपने-अपने नगरों और गाँवों
समेत अश्दोद और अज्जा वरन् मिस्र के
नाले तक और महासमुन्दर के किनारे तक
जितने नगर है 48 पर्वतीय इलाके में ये
हैं अर्थात् शामीर, यत्तीर, सोको 49 दन्ना,
एशान, 50 अनाब,एशतमो,आनीम, 51 गोशेन,
होलोन, और गीलो; ये ग्यारह नगर हैं,
और इनके गाँव भी हैं। 52 फिर अराब,
दूमा,एशान, 53 मानीम, बेत्तप्पूह, अपेका
54 हुमता किर्यतर्बा और सोअर, इन के नौ
नगर और गाँव भी, 55 माओन, कर्मेल, जीप,
यूता 56 यिज्रेल, योकदाम, जानोह 57 कैन,
गिबा और तिम्ना; ये दस नगर हैं और गाँव
भी। 58 फिर हलहूल, बेतसूर, गदोर 59 मरात,
बेतनोत और एलतकोन। ये छैः नगर हैं साथ
में इन के गाँव भी हैं। 60 फिर किर्यतबाल और
रब्बा। ये दो नगर हैं और इन के गाँव भी।
61 जंगल के नगर ये हैं : बेतराबा, मिद्दीन,
सकाका, 62 निबशान, लोन वाला, एनगदी।
ये छै नगर और इन के गाँव भी। 63 यबूसियों
को यरूशलेम के लोग निकाल नहीं पाए।
इसलिए आज तक वे वही रहते रहे हैं।

16 यूसुफ़ की सन्तान का हिस्सा चिट्ठी
डालने से निर्धारित हुआ। उनकी
सीमा यरीहो के पास की यरदन नदी से
अर्थात् पूर्व की ओर यरीहो के पानी से
शुरू होकर उस पहाड़ी देश से होते हुए
जो जंगल में है, बेतेल को पहुँची। 2 वह
वहाँ से लूज तक चली और एरेकियों की
सीमा से होते हुए अतारोत पर जा निकली
3 पश्चिम की ओर यपलेतियों की सरहद से
उतर कर नीचे वाले बेत-होरोन की सीमा
से होकर गेजेर को पहुँची और समुन्दर पर
निकली। 4 तब मनश्शे और एप्रैम नाम यूसुफ़
के दोनों बेटों की सन्तान ने अपना-अपना
हिस्सा लिया। 5 एप्रैमियों की सरहद उनके
कुलों के अनुसार यह ठहरी; अर्थात् उनके
हिस्से की सीमा पूर्व से शुरू होकर अत्रोत
- अदार से होते हुए ऊपर वाले बेत-होरोन
तक पहुँची 6 और उत्तरी सीमा पश्चिम की
तरफ़ से मिकमतात से शुरू होकर पूरब की
ओर मुड़ कर तानतशीलो तक गयी। एप्रैमियों
के गोत्र का हिस्सा उनके कुलों के अनुसार
यही था 7 फिर यानोह से वह अतोरात और
नारा से निकलती हुयी यरीहो के पास होकर
यर्दन के पार निकली 8 वही सरहद तप्पूह से

[a] **15.25** या हासोर

निकलकर, पश्चिम की ओर जाकर, काना
के नाले तक होकर समुन्दर पर निकली।
एप्रैमियों के गोत्र का हिस्सा उनके कुलों
के मुताबिक यही हो गया। 9 मनश्शेइयों के
हिस्से के बीच भी कई एक नगर अपने-अपने
गाँव सहित एप्रैमियों के लिए अलग किए
गए। 10 लेकिन जो कनानी गेजेर में बसे थे,
उनका एप्रैमियों ने वहाँ से नहीं निकाला;
इसलिए वे कनानी उनके बीच आज तक हैं।
वे लोग बेगारी में गुलाम की तरह काम करते
हैं।

17 फिर यूसुफ़ के बड़े बेटे मनश्शे के
गोत्र का हिस्सा चिट्ठी डालने से यह
रहा। मनश्शे का बड़ा बेटा गिलाद का पिता
माकीर सैनिक था। इसलिए उसके वंश को
गिलाद और बाशान मिल गया 2 इसलिए यह
हिस्सा दूसरे मनश्शेइयों के लिए उनके कुलों
के अनुसार ठहरा। कहने का मतलब यह
है कि अबीएज़ेर, हेलेक, असीएल, शेकेम,
हेपेर और शमीदा जो अपने-अपने कुलों के
अनुसार यूसुफ़ के बेटे मनश्शे के वंश के
आदमी थे, उनके अलग-अलग वंशों के लिए
ठहरा। 3 परन्तु हेपेर जो गिलाद का बेटा
माकीर का पोता और मनश्शे का परपोता
था, उसके बेटे सलोफ़ाद के मात्र बेटियाँ
हुयी। इन पुत्रियों के नाम थे, महला, नोआ,
होग्ला, मिल्का और तिर्सा। 4 इसके बाद वे
एलीआजार पुरोहित, नून के बेटे यहोशू और
प्रधानों के पास जाकर कहने लगे, “याहवे
ने मूसा को आदेश दिया था कि वह हम
को हमारे भाईयों के बीच हिस्सा दे।” तब
यहोशू ने वैसा ही किया। 5 मनश्शे को यर्दन
के उस पार गिलाद देश और बाशान को
छोड़, दस हिस्से मिले 6 क्योंकि मनश्शेइयों
के बीच में मनश्शी महिलाओं को भी हिस्सा
प्राप्त हुआ। दूसरे मनश्शेइयों को गिलाद देश
मिला। 7 मनश्शे की सीमा आशेर से लेकर
मिकमतात तक पहुँचती थी, जो शेकेम के
सामने है; फिर वह दक्षिण की तरफ़ बढ़ कर
एनतप्पूह के नागरिकों तक पहुँची। 8 तप्पूह
की ज़मीन मनश्शे को मिली, लेकिन तप्पूह
नगर जो मनश्शे की सरहद पर स्थित है,
वह एप्रैमियों का हो गया। 9 फिर वह सरहद
वहाँ से हुयी काना नाले तक पहुँचने के बाद,
दक्षिण तक पहुँच गयी। हालांकि ये नगर
मनश्शे के नगरों के बीच में थे, तौभी एप्रैम
के ही रहे। मनश्शे की सरहद उस नाले की
उत्तर की ओर से जाकर समुन्दर पर निकली
10 दक्षिण की ओर का देश एप्रैम को और
उत्तर की ओर का मनश्शे को मिला। उसकी
सीमा समुन्दर ही थी वे उत्तर की ओर आशेर
से और पूरब की ओर इस्साकार से जा
मिले 11 मनश्शे को इस्साकार और आशेर
अपने-अपने नगरों सहित बेतशान, दिबलाम
और अपने-अपने नगरों सहित तानाक के
निवासी और अपने नगरों सहित मगिद्दो के
रहने वाले, ये तीनों जो ऊँची जगहों पर
बसे हैं, मिले। 12 लेकिन मनश्शेई उन नगरों
के निवासियों को उन में से नहीं निकाल
पाए। इसलिए कनानी वहाँ बसे रहे। 13 जब
इस्राएली ताकतवर हो गए, तब कनानियों से
बेगारी कराने लगे। उन्होंने पूरी तरह से उन्हें
बाहर नहीं निकाला 14 यूसुफ़ की सन्तान ने
आकर यहोशू से कहा, “हमारी संख्या बहुत
है। अब तक हम ने याहवे की आशीष पायी
है। फिर तुमने हमारे हिस्से के लिए चिट्ठी डाल
कर एक ही हिस्सा क्यों दिया है।” 15 यहोशू
बोला, “यदि तुम्हारी संख्या अधिक है और
एप्रैम का पहाड़ी देश तुम्हारे लिए छोटा हो,
तो परिज्जियों और रपाईयों का देश जो जंगल
में है, वहाँ जाओ और पेड़ों को काट डालना

16 यूसुफ़ की सन्तान ने कहा, “वह पहाड़ी
देश हमारे लिए काफी नहीं है। क्या बेतसान
और उसके नगरों में रहने वाले, क्या यिज्रेल
की तराई में रहने वाले जितने कनानी नीचे
के देश में रहते है, उन सभी के पास लोहे
के रथ हैं। 17 फिर यहोशू ने एप्रैमी, मनश्शेई
अर्थात् यूसुफ़ के पूरे परिवार से कहा, “तुम
लोग गिनती में बहुत हो और तुम ताकतवर
भी हो। इसलिए तुम्हें केवल एक हिस्सा ही
मिल पाएगा। 18 जो पहाड़ी इलाका है, वह
भी तुम्हारा हो जाएगा। उस जंगल के पेड़
काट डालने के बाद वह भी तुम्हारा ही होगा।
कनानी लोग हालांकि शक्तिशाली हैं और
लोहे के रथ भी रखते हैं, फिर भी तुम उन्हें
बाहर कर सकोगे। ”

18 फिर इस्राएली शीलो में आए और
वहीं मिलाप वाला तम्बू खड़ा
किया। पूरा देश उनके कब्ज़े में आ चुका
था। 2 इस्राएलियों में से सात कबीले के
लोगों को उनका हिस्सा अब तक नहीं मिल
पाया था 3 तब यहोशू इस्राएलियों से बोला,
“जो देश तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें दिया है,
उसे अपने कब्ज़े में कर लेने में तुम तक
आलस्य दिखाओगे? 4 हर गोत्र के पीछे तीन
आदमियों को लो। मैं उन्हें इसलिए भेजूँगा कि
वे सब जगहों का मुआयना कर लें। साथ ही
अपने गोत्र के हिस्से के इस्तेमाल के अनुसार
ब्यौरा लिख कर मेरे पास वापस आएँ। 5 वे
देश के सात हिस्से लिखें। यहूदी लोग दक्षिण
में अपने भाग में और यूसुफ़ के परिवार के
लोग उत्तर की ओर अपने भाग में रहें। 6 देख
में सात हिस्से लिख कर मेरे पास ले आओ।
तुम्हारे सामने मैं यहीं चिट्ठी डालूँगा। 7 तुम्हारे
बीच लेवियों का कोई भाग न रहेगा याहवे
का दिया हुआ पुरोहितपन ही उनका भाग
है। गाद, रूबेन और मनश्शे के आधे कबीले
के लोग यरदन के पूर्व की ओर याहवे के
सेवक मूसा का दिया हुआ अपना-अपना
हिस्सा पा चुके हैं। 8 तब वे आदमी उठे
और चल पड़े। उस देश का हाल-चाल जानने
वालों को यहोशू का आदेश था कि वे सब
जगह जाएँ और लौटकर जानकारी दें। वह
शीलो में उनके लिए चिट्ठी डालने वाला था
9 उन लोगों ने ऐसा ही किया। उन्होंने देश
के सात भाग करके उनका हाल लिखा और
यहोशू के पास आए 10 तब शीलो में यहोशू ने
चिट्ठियाँ डालीं। वहीं पर ज़मीन का बँटवारा
किया गया 11 बिन्यामिनियों के कबीले की
चिट्ठी उनके कुलों के अनुसार निकली और
उनका हिस्सा यहूदियों और यूसुफ़ियों के
बीच निकला 12 उनकी उत्तरी सरहद यर्दन
से शुरू हुयी और यरीहो की उत्तरी अलग
से चढ़ते हुए पश्चिम की ओर पहाड़ी देश में
होकर बेतावन के जंगल में निकली। 13 वहाँ
से वह लूज को पहुँची और लूज की दक्षिणी
अलग से होते हुए निचले बेथोरोन की दक्षिण
ओर के पहाड़ के पास होते हुए अप्रोतदार को
उतर गयी। 14 फिर पश्चिमी सिवाना मुड़ के
बेथोरोन के सामने और उसके दक्षिण ओर के
पहाड़ से होते हुए किर्यतबाल नामक यहूदियों
के नगर पर निकली; पश्चिम का सिवाना यही
ठहरा। 15 फिर दक्षिण अलग की सीमा पश्चिम
से आरम्भ होकर किर्यत्यारीम के मुहाने से
मिल कर नेप्तोह के सोते पर पहुँची 16 और
उस पहाड़ के सिरे पर उतरी, जो हिन्नोम
के बेटे की तराई के सामने और रपाईम
नामक तराई के उत्तर में है, वहाँ से वह
हिन्नोम की तराई में अर्थात् यबूस की दक्षिण
अलग होकर एनरोगेल को उतरी। 17 वहाँ
से वह उत्तर की ओर घूम कर एनशेमेश को
निकल कर उस गलीलोत की तरफ़ गयी, जो

अदुम्मीम की चढ़ाई के सामने है। फिर वह
वहाँ से रूबेन के बेटे बोहन के पत्थर तक
उतर गयी 18 वहाँ से वह उत्तर की दिशा में
जाकर अराबा के सामने के पहाड़ की अलग
से जाकर अराबा को उतरी। 19 वहाँ से वह
सीमा बेथोग्ला की उत्तर दिशा में कोल में
यरदन के मुहाने पर निकली। यही दक्षिण की
सीमा भी ठहरी। 20 पूर्व के ओर की सीमा
यरदन ही रही। 21 बिन्यामिनियों का हिस्सा
चारों तरफ़ की सीमाओं के साथ उनके कुलों
के आधार पर यही हुआ। बिन्यामिनियों के
कबीले को उनके कुलों के मुताबिक जो नगर
मिले वे ये थे : यरीहो, बेथोग्ला, एम्मेकसीम
22 बेतराबा, समारैम, बेतेल 23 अब्बीम,
पारा, ओप्रा, 24 कपरम्मोनी, ओप्नी और
गेबा। ये बारह नगर और इन के भीतर के गाँव
25 गिबोन, रामा, बेरोत 26 मिस्पा, कपीरा,
मोसा 27 रोकेम, यिपैल, तरला 28 सेल, एलेप,
यबूस, गिबत और किर्यत। इन के गाँव
सहित चौदह नगर मिले। कुलों के अनुसार
बिन्यामीनियों को यही सब मिला।

19 दूसरी चिट्ठी शिमोनियों के कुलों
के अनुसार उनके गोत्र के नाम पर
निकलीं उनका भाग यहूदियों के भाग के
बीच में ही था 2 उनके अधिकार में ये नगर हैं
: बेर्शेबा, शेबा, मोलादा 3 हसर्शूआल, बाला,
एसेम, 4 एलतोलद, बतूल, होर्मा 5 सिकलग,
बेत-मर्काबोत, हसर्शूसा 6 बेतलबाओत और
शारूहेन : ये तेरह नगर और इन के गाँव
मिले। 7 फिर ऐन, रिम्मोन, एतेर और बाशान
आशान, ये चार नगर गाँव सहित 8 और
बालत-बेर जो दक्षिण देश का रामा भी
कहलाता है, वहाँ तक इन नगरों के चारों
ओर के सभी गाँव उन्हें प्राप्त हुए। शिमोनियों
के गोत्र का हिस्सा उनके कुलों के अनुसार
यही ठहरा 9 शिमोनियों का हिस्सा यहूदियों
के भाग में से दिया गया, क्योंकि यहूदियों
के लिए वह बहुत अधिक हो गया था।
इसलिए शिमोनियों का हिस्सा उन्हीं के
मध्य था। 10 जबूलूनियों के नाम पर तीसरी
चिट्ठी निकली उनके क्षेत्र की सीमा सारीद
तक रही। 11 और उनकी सीमा पश्चिम की
तरफ़ मरला को चढ़ कर दब्बेशेत तक
पहुँची। यह योकनाम नाले तक पहुँच गयी।
12 फिर सारीद से वह सूर्योदय की ओर घूम
कर किसलोत्ताबोर की सीमा तक पहुँची।
वहाँ से बढ़ती हुयी दाबरत में निकली
और यापी तक पहुँची 13 वहाँ से पूरब की
ओर आगे बढ़ कर गथेपेर और इत्कासीन
तक गयी और रिम्मोन में जा निकली,
जो नेआ तक फैला हुआ है। 14 वहाँ से
वह सीमा उसके उत्तर की ओर से मुड़
कर हन्नातोन पर पहुँची और यिप्ताहेल की
तराई में जा निकली। 15 कत्तात, नहलाल,
शिम्रोन, यिदला और बेतलेहेम, ये बारह
नगर उनके गाँवों सहित उसी भाग के ठहरे।
16 जबूलूनियों का हिस्सा उनके कुलों के
अनुसार यही हुआ। इन्हीं के नगरों में गाँव
भी थे 17 चौथी चिट्ठी इस्साकारियों के कुलों
के अनुसार उनके नाम पर निकली 18 और
उनकी सीमा यिज़्रेल, कसुल्लोत, शूनेम
19 हपारैम, शीओन, अनाहरत, 20 रब्बीत,
किश्योन, एबेस 21 रेमेत, एनगन्नीम,
एनहद्दा और बेत्पस्सेस तक पहुँच गयी।
22 फिर वह सरहद ताबोर-शहसुमा और
बेतशेमेश तक पहुँची और उनकी सीमा
यरदन नदी पर निकली। इस तरह उन्हें
सोलह नगर अपने-अपने गाँव सहित मिल
गए 23 इस्साकारियों के गोत्र का हिस्सा
कुलों के अनुसार नगरों-गाँवों सहित था।
24 पाँचवी चिट्ठी आशेरियों के गोत्र के कुलों

के अनुसार उनके नाम पर निकली 25 उनकी
सीमा में हेल्कात, हली, बेतेल, अक्षाप
26 अलाम्मेल्लेक, अमाद और मिशाल थे। वह
पश्चिम की तरफ़ काम्मैल तक शाहोलिब्नात
तक पहुँच गयी। 27 सूर्योदय की ओर मुड़
कर वह बेतदागोन गयी और जबलून के
हिस्से तक और यिप्ताहेल की तराई से उत्तर
की ओर होकर बेतेमेक और नीएल तक
पहुँची। यह उत्तर की ओर जाकर काबूल
पर निकली। 28 वह एब्रोन, रहोब, हम्मोन
और काना से होकर बड़े सीदोन को पहुँची
29 वहाँ से वह सरहद मुड़ कर रामा से होते
हुए सोर नाम गढ़ वाले नगर तक चला गया।
फिर सरहद होसा की ओर मुड़ कर और
अकजीब के निकट के देश में होकर समुद्र
पर निकली। 30 उम्मा, अपेक और रहोब
भी उनके हिस्सा में थे। इस बाईस नगर
अपने गाँवों समेत उन्हें मिल गए 31 कुलों के
आधार पर आशेरियों के कबीले का हिस्सा
नगरों और गाँवों का था 32 छठवीं चिट्ठी
नप्तालियों के कुलों के अनुसार उनके नाम
पर थी। 33 उनका सिवाना हेलेप से और
सानन्नीम के बांझ पेड़ से अदामी-नेकेब और
यब्नेल से होकर लक्कूम को जाकर यर्दन के
पार निकला 34 वहाँ से वह पश्चिम की ओर
मुड़ा, अजनोत्ताबार गया। वहाँ से हुक्कोक
और दक्षिण और जबूलून तक और पश्चिम
की ओर आशेर तक और सूर्योदय की
ओर यहूदा के पास की यरदन तक पहुँचा।
35 उनके मज़बूत नगर ये हैं : सिद्दीम, सेर,
हम्मत, रक्कत, किन्नेरेत 36 अदामा, रामा,
हासोर 37 केदेश, एद्रेई, एन्हासेर, 38 येरोन,
मिगदलेल, होरेम, बेतनोत और बेतशेमेश
: ये उन्नीस नगर गाँवों सहित उनको मिले।
39 कुलों के आधार पर नप्तालियों के कबीले
का हिस्सा नगरों और गाँव सहित यही था।
40 सातवीं चिट्ठी कुलों के मुताबिक दानियों
के गोत्र के नाम पर निकली। 41 उनके हिस्से
की सीमा में सोरा,एशताओल,इरशेमेश
42 शालब्बीन, अय्यालोन,यितला, 43 एलोन,
तिम्ना, एक्रोन, 44 एलतके,गिब्बतोन,
बालात, 45 यहूद,बनेबराक,गत्रिम्मो,
46 मेयकोन ,रक्कोन और यापो के सामने
की सीमा भी उन्हीं की थी। 47 दानियों
का हिस्सा इस से अधिक हो गया। दानी
लेमेश पर चढ़कर उस से लड़े। उन्होंने उसे
तलवार से मार डाला।लेशेम को अपने
अधिकार में करके नाम बदल कर दान रख
दिया। 48 कुलों के हिसाब से दानियों कबीले
का हिस्सा नगरों और गाँव सहित यही
था। 49 देश के बाँटे जाने का काम खत्म
होने पर इस्राएलियों ने यहोशू को भी कुछ
हिस्सा दिया। 50 याहवे के कहने के अनुसार
उसने जो नगर माँगा था ,दिया। एप्रैम के
पहाड़ी एलाके के विम्नत्सेरह में वह रहने
लगा। 51 जो जो हिस्सा एलीआजार पुरोहित
और नून के बेटे यहोशू, और इस्राएलियों
के कबीलों के घरानों के बुज़ुर्गों के खास
आदमियों ने शीलो में, मिलाप वाले तम्बू
के दरवाज़े पर, याहवे के सामने चिट्ठी डाल
कर बाँट दिये वे यही हैं। इस तरह ज़मीन
बाँटने का काम खत्म हुआ।

20 एक दिन यहोशू से याहवे ने
इस्राएलियों की यह बताने के लिए
कहा कि शरण लेने वाले नगरों के सम्बन्ध
में तुम से मैंने जो कुछ कहा था, उसे पूरा कर
लो। 3 ताकि यदि कोई गलती से किसी को
मार डाले, तो शरण नगर में चला जाए। खून
का बदला लेने वालों से इन नगरों के कारण
गलती से खून करने वाला बच सकेगा।
4 वहाँ जाने के बाद वह वहाँ के बुज़ुर्गों को

अपने बारे में बताए और उनकी अनुमति से
उनके साथ रहने लगे। 5 बदला लेने वाला
यदि वहाँ पहुँचता है तो वे उसे पूरी देख-रेख
दें। 6 वह शरण स्थान ही में तब तक रहे, जब
तक कि उस का मुकदमा न हो और उन दिनों
का महापुरोहित जीवित रहे। उसके बाद वह
वापस आकर अपने नगर में और घर में रहने
लगे। 7 तब उन लोगों ने केदेश और हेब्रोन को
शरणस्थान होने का ऐलान किया 8 यरीहो के
निकट यर्दन के पूरब की तरफ़ उन्होंने रूबेन
के गोत्र के हिस्से में बेसेर और गिलाद के
रमोत को और मनश्शे के गोत्र के हिस्सों में
बाशान के गोलान को निश्चित किया। 9 सारे
इस्राएलियों के लिए शरण नगर इन्हीं को रखा
गया, ताकि वह वहाँ तब तक रहे जब तक
इन्साफ़ न हो जाए।

21 तब लेवियों के पूर्वजों के परिवारों
के खास-खास आदमी एलीआजार
पुरोहित और नून के बेटे यहोशू और इस्राएली
कबीलों के पूर्वजों के परिवारों के खास-खास
आदमियों के पास कनान देश के शीलो नगर
में आए 2 वे बोले, “मूसा के द्वारा याहवे ने
हमें बस जाने के लिए नगर और जानवरों
की चरागाह के लिए आदेश दिया था” 3 ऐसा
सुन कर इस्राएलियों ने अपने-अपने हिस्से में
से लेवियों को चरागाह सहित निम्नलिखित
नगर दिए। 4 चिट्ठी कहातियों के कुलों के
नाम पर निकली थी, इसलिए लेवियों में से
हारून पुरोहित के वंश को यहूदी, शिमोन
और बिन्यामीन के कबीलों के हिस्सों में से
तेरह नगर हासिल हुए 5 कहातियों को एप्रैम
के कुलों और दान के कबीले और मनश्शे के
आधे कबीले के भागो में से चिट्ठी डाल डाल
कर दस नगर दिए 6 गेर्शोनियों को इस्साकार
के गोत्र के कुलों, आशेर, नप्ताली के गोत्रों के
हिस्सों में से और मनश्शे के उस आधे गोत्र के
हिस्सों में से भी जो बाशान में था चिट्ठी डाल
कर तेरह नगर दिए गए 7 कुलों के आधार
पर मरारियों को रूबेन, गाद और जबूलून
के गोत्रों के भागो में से बारह नगर दिए
गए 8 याहवे परमेश्वर के कहने के अनुसार
इस्राएलियों ने लेवियों की चरागाहों सहित ये
नगर चिट्ठी डाल कर दिए 9 उन्होंने यहूदियों
और शिमोनियों के गोत्रों के भागो में से ये
नगर जिन के नाम लिखे हैं, दिए। 10 इन नगरों
को लेवीय कहाती कुलों में से हारून के
वंश के लिए अलग किया गया था, क्योंकि
पहली चिट्ठी उन्हीं के नाम पर थी 11 उन्होंने
उनको यहूदा के पहाड़ी देश में चारों ओर
की चरागाहों सहित हेब्रोन नगर दे दिया
12 लेकिन वहाँ के खेत और गाँव कालेब
को दिए 13 फिर हारून पुरोहित के वंश
को चरागाहों सहित शरण नगर हेब्रोन और
चरागाह समेत लिब्ना, 14 यत्तीर, एशतमो,
15 होलोन, दबीर, ऐन 16 युत्ता और बेतशेमेंश
दिए। इस तरह उन दोनों गोत्रों के हिस्सों में से
नौ नगर दिए। 17 बिन्यामीन के गोत्र के हिस्से
में से अपने- अपने चरागाहों सहित ये चार
नगर दिये,अर्थात गिबोन, गेबा, 18 अनातोत
और अल्मोन के चरागाह, यानि कि सब
मिला कर चार नगर। 19 इस तरह हारून
के वंश को तरह नगर और उनकी चराईयाँ
मिल गयीं। 20 फिर लेवियों के कहातियों
में से शेष कहातियों के कुलों को एप्रैम
कबीले के हिस्से से नगर चिट्ठी डाल कर
दिये गये। 21 एप्रैम कबीले के पहाड़ी इलाके
में शेकेम जो खूनी लोगों के लिये बचाव
का नगर था और उसकी चराईयाँ गेज़ेर
और उसके चरागाह सहित, 22 किसबैम और
उसके चरागाह और बत होरोन तथा उसके
चरागाह, कुल मिला कर चार नगर। 23 तब

दान के कबीले की ज़मीन में से एलतके और
उसके चरागाह, 24 अय्यालोन और उसकी
चराईयाँ, गात्रिम्मोन और उसकी चराईयाँ,
कुल संख्या चार। 25 मनश्शे के आधे कबीले
के हिस्से से तानाक और उसकी चराईयाँ
तथा गात्रिम्मोन और उसके चरागाह अर्थात
दो नगर। 26 इस तरह बाकी बचे कहातियों
के कुलों के लिये चराईयों समेत दस नगर
थे। 27 लेवी के कुलों में से एक अर्थात
गेर्शोनियों को मनश्शे के आधे गोत्र के हिस्से
में से बाशान में चराई सहित गोलान जो
खूनी के लिये शरण नगर ले लिये इलाका
था और चराई के साथ बेशतरा यानि कि
दो नगर, 28 इस्साकार के गोत्र के भाग में
से किश्योन और उसके चरागाह, दाबरत
और उसके चरागाह, 29 यमूर्त और उसके
चरागाह अर्थात चार नगर दिये। 30 फिर
आशेर के कबीले के हिस्से में से मिशाल और
उसके चरागाह अब्दोन और उसके चरागाह,
31 हेल्कात और उसके चरागाह,तथा रहोब
और उसके चरागाह दिये। 32 नप्ताली के
कबीले के हिस्से में से गलील में चरागाह
समेंत कादेश जो खूनी के लिये बचने की
जगह थी,हम्मोत-दोर और उसकी चराईयाँ
तथा कर्तान और उसकी चराईयाँ दी गयीं।
33 गेर्शोनियों को उनके कुलों के मुताबिक
चराईयों के साथ तेरह नगर मिले। 34 मरारियों
के कुलों को जबूलून के कबीले के
हिस्से में से अपनी-अपनी चरागाह सहित
योकनाम,कर्त्ता, 35 दिम्ना,और नहलाल, ये
चार नगर दिये गये। 36 रूबेन के कबीले
के हिस्से में अपने-अपने चरागाह के साथ
बेसेर,यहसा, 37 कदेमोत और मेपात आदि
नगर दिये गये। 38 गाद के गोत्र का जो हिस्सा
था,उसमें से अपनी- अपनी चराईयों सहित
हत्या करने वाले के शरण नगर गिलाद में का
रामोत,महनैम 39 हेशबोन व याजेर मिला कर
चार नगर। 40 लेवियों के बचे कुलों अर्थात
मरारियों के कुलों के मुताबिक, उनके सभी
नगर ये ही हुए। इस तरह उनको बारह नगर
चिट्ठी डाल कर दिये गये। 41 इस्राएलियों की
अपनी ज़मीन के बीच लेवियों के सभी नगर
अपनी- अपनी चराईयों सहित अड़तालीस
हुए। 42 ये सभी जगह चारों तरफ़ की चराईयों
के साथ ठहरे। इन सभी नगरों की यही हालत
थी। 43 इस तरह याहवे ने इस्राएलियों को वह
पूरा देश दिया, जिस के बारे में उनके पूर्वजों
से वायदा किया गया था। 44 उस वायदे के
अनुसार उन्हें शान्ति भी दी। उनका कोई भी
दुश्मन उनका मुकाबला न कर पाया।वे सभी
उनके नीचे आ गये। 45 वे सभी भलाई की
बातें जो परमेश्वर ने उन से कही थीं, पूरी हो
गयीं ।

22 यहोशू ने रूबेनियों, गादियों और
मनश्शे के आधे गोत्रियों को बुलाया
और कहा, 2 “परमेश्वर और मेरे द्वारा दी
गयी बातों का पालन तुमने किया है, 3 तुमने
अपने भाईयों को आज तक छोड़ा नहीं है।
तुमने बड़ी सावधानी से परमेश्वर के आदेशों
का पालन किया है। 4 अपने कहे हुए के
अनुसार परमेश्वर याहवे ने तुम्हारे भाईयों
को आराम[a] दी है। इसलिए तुम अपनी भूमि
पर अपने तम्बुओं में लौट जाओ 5 परमेश्वर
से प्रेम रखना और मूसा द्वारा बतायी गयी
बातों के हिसाब से ही जीना। उनकी ही
इबादत करना और सारे मन और जान से
उनकी सेवा करते रहना। 6 आशीर्वाद देने के
बाद यहोशू ने उन्हें जाने दिया 7 मनश्शे के
गोत्र को यहोशू ने बाशान में हिस्सा दिया

[a] 22.4 शान्ति

था। लेकिन दूसरे आधे गोत्र को उसने उनके
भाईयों के बीच यरदन के पार पश्चिम की
तरफ़ भूमि दी थी। 8 विदा करते समय उनको
भी यहोशू ने आशीर्वाद दिया। उसने कहा कि
जानवर, चाँदी, सोना, पीतल, लोहा, कपड़े,
दौलत लेकर अपने घर जाओ। उसने यह भी
कहा कि दुश्मनों से लूटी दौलत को आपस
में बाँट लेना 9 तब रूबेनी, गादी और मनश्शे
के आधे गोत्री शीलो नगर से गिलाद लौट
गए। 10 रूबेनी, गादी और मनश्शे के आधे
गोत्रियों ने कनान में देखने लायक एक वेदी
बनायी 11 इस्राएलियों को इस बात की खबर
लग गयी। 12 खबर सुनते ही वे उन से लड़ने
निकल पड़े। 13 तब इस्राएलियों ने गादियों,
रूबेनियों और मनश्शे के आधे गोत्रियों के
पास गिलाद देश में एलीआजार पुरोहित के
बेटे पीनहास को 14 और उसके साथ दस
प्रधानों को भेजा। 15 उन्होंने गिलाद देश में
रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे
गोत्रियों के पास जाकर कहा, 16 "याहवे के
लोग पूछते हैं कि तुम लोगों ने यह धोखा
कैसे दे दिया? वेदी बनवा कर तुमने बलवा
किया है और इसका मतलब परमेश्वर की
मानना तुमने बन्द कर दिया है। 17 याद करो,
पोर में हमारा किया गया दुष्ट काम क्या
कम था। उस समय लोगों को सज़ा मिली
थी लेकिन आज तक हम उसके परिणाम
भुगत रहे हैं। जो तुमने किया है क्या यह एक
मामूली सी बात है? 18 कि तुम याहवे की
इच्छा के अनुसार जीना छोड़कर अपने मन
से जीना चाह रहे हो। तुम आज परमेश्वर
के खिलाफ़ जा रहे हो, कल सारे इस्राएलियों
पर उनका गुस्सा भड़केगा। 19 लेकिन यदि
तुम्हारी अपनी ज़मीन अशुद्ध हो तो पार
आकर याहवे की भूमि में, जहाँ याहवे की
उपस्थिति विशेष है, हम लोगों के बीच में
अपनी भूमि कर लो। लेकिन वेदी बना कर
न हमारे विरोध में खड़े हो, न परमेश्वर
के। 20 जब जेरह के बेटे आकान ने अलग
की हुयी वस्तुओं के बारे में झूठ बोला तभी
परमेश्वर का गुस्सा सब लोगों पर भड़क
उठा। उसके अपराध की सज़ा मात्र उसी को
न मिली थी। 21 तब रूबेनियों, गादियों, और
मनश्शे के आधे गोत्रियों ने इस्राएल के लोगों
को जवाब दिया, 22 "ईश्वरों के परमेश्वर
याहवे जानते हैं और इस्राएलियों को भी यह
मालूम है, कि यदि याहवे से मुड़ कर हम
ने यह काम किया है तो वह हमारी जान ले
लें। 23 यदि हमारे वेदी बनाने का मकसद यह
है कि हम परमेश्वर के रास्ते को छोड़ रहे
हैं, या इसलिए कि उस पर होम बलि, अन्न
बलि या मेलबलि चढ़ाएँ, तो याहवे स्वयं
न्याय करें। 24 हम ने ऐसा इस डर से किया
है कि आने वाले सालों में तुम्हारी औलाद
हमारी औलाद से यह न कहने पाए, "तुम को
इस्राएल के परमेश्वर से क्या लेना देना?"
25 हे रूबेनियों और गादियों, याहवे ने हमारे
और तुम्हारे बीच यर्दन को सीमा ठहरा दिया
है, इसलिए याहवे में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं
है। कह कर तुम्हारे लोग हमारे लोगों में से
परमेश्वर का डर निकाल देंगे। 26 इसलिए
हम ने सोचा कि अपने लिए हम एक वेदी
बना लें, जो कि कुर्बानी चढ़ाने के लिए नहीं
होगी। 27 इस वेदी का मकसद होगा कि यह
भविष्य में एक दूसरे के वंश के बीच गवाही
हो। कुर्बानियाँ तो हम लोग साथ-साथ ही
करेंगे अलग नहीं 28 इसलिए हम ने कहा,
"भविष्य में वे लोग जब हम से ऐसा कहने
लगेंगे, तब हमारा जवाब यह होगा कि याहवे
की वेदी के नमूने के मुताबिक बनी इस वेदी
को देखो, जिसे हमारे बुज़ुर्गों ने कुर्बानियाँ
चढ़ाने के लिए नहीं बनाया था। इसे हमारे

बीच गवाह के निशान के तौर पर बनाया गया
था 29 यह तो हम से हो ही नहीं सकता था कि
हम याहवे को और बलि चढ़ाए जाने वाली
वेदी को छोड़कर दूसरी वेदी का इस्तेमाल
करें 30 रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के
आधे गोत्रियों की इन बातों को सुनने के बाद
पीनहास पुरोहित और उसके साथ मण्डली
के मुखिया, जो इस्राएल के हज़ारों के मुख्य
आदमी थे, बड़े खुश हुए 31 एलीआजार
पुरोहित के बेटे पीनहास ने रूबेनियों, गादियों
और मनश्शेइयों से कहा, “तुम याहवे के
लिए विश्वासयोग्य रहे हो, इसलिए हम जान
गए हैं कि याहवे हमारे बीच में हैं। यह भी
कि तुम लोगों ने इस्राएलियों को याहवे के
दण्ड से बचाया है।” 32 तब एलीआजार का
बेटा पीनहास प्रधानों सहित रूबेनियों और
गादियों के पास से गिलाद होते हुए कनान
देश में इस्राएलियों के पास लौट गया और
ये सब उन्हें बताया 33 तब इस्राएली खुश हुए
और परमेश्वर की बड़ाई की। उसके बाद
फिर कभी उन्होंने रूबेनियों तथा गादियों पर
हमला करके बर्बाद करने की बात न करी
34 और रूबेनियों तथा गादियों ने कहा, “यह
वेदी हमारे बीच में इस बात की गवाह है कि
याहवे ही परमेश्वर हैं। यह इसलिए उस वेदी
का नाम गाद रखा।

23 बहुत समय बीत जाने पर अपने
चारों ओर के दुश्मनों से इस्राएल
को शान्ति मिली। यहोशू भी तब तक बहुत
बूढ़ा हो चुका था। 2 तभी यहोशू ने बुज़ुर्गों,
खास-खास लोगों और अधिकारियों को
बुलाकर कहा, “देखो, मैं बहुत बूढ़ा हो चुका
हूँ। 3 तुम आज तक देखते रहे, कि आस पास
के देशों के साथ तुम्हारे परमेश्वर ने क्या
किया। तुम्हारे तरफ़ से लड़ने वाले याहवे
परमेश्वर ही हैं। 4 देखो, चिट्ठी डाल कर, मैंने
बचे हुए देशों को तुम्हारे गोत्रों का हिस्सा कर
दिया है। यर्दन से लेकर सूर्यास्त की ओर के
बड़े समुन्दर तक रहने वाले लोगों को भी मैंने
ऐसा ही दिया है, जिन को मैंने काट डाला
है। 5 तुम्हारे देखते-देखते, तुम्हारे परमेश्वर
उन्हें उनके देश से भगा देंगे। तुम याहवे के
कहने के अनुसार उनके देश को पा लोगे
6 इसलिए हिम्मत रखो और मूसा की किताब
में लिखी बातों के आधार पर जीवन जीना।
डर से दाएँ बाएँ मत मुड़ना। 7 तुम्हारे बीच
रहने वालों के देवताओं से दूर ही रहना।
उनकी कसम भी मत खाना। न ही उनके
सामने झुकना और न ही उनके भजन गाना।
8 जिस तरह से आज तक तुम परमेश्वर
की स्तुति आराधना करते रहे हो, वैसे ही
करते रहना। 9 तुम्हारे देखते-देखते परमेश्वर
ने ताकतवर देशों को हरा दिया। आज तक
तुम्हारे सामने कोई भी टिक न पाया है।
10 तुम में से एक जन हज़ारों को भगा देगा,
क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर खुद तुम्हारे साथ
लड़ते है। 11 इसलिए परमेश्वर से प्रेम रखने
में पूरी सावधानी बरतना। 12 यदि तुम याहवे
परमेश्वर को न मानने वाले लोगों से शादी
करने लगो, 13 तब तो भविष्य में परमेश्वर
उन लोगों को तुम्हारे सामने निकालेंगे नहीं।
ये लोग तुम्हारे लिए जाल और फ़न्दा बन
जाएँगे, ये लोग तुम्हारे पांजरों के लिए कोड़े
और तुम्हारी आँखों में काँटे बन जाएँगे।
आखिर में पायी हुयी इस अच्छी ज़मीन को
तुम खो दोगे। 14 सुनो, मैं दुनिया के सभी
लोगों को जानता हूँ और तुम सभी जानते हो
कि परमेश्वर द्वारा कही गयी हर एक अच्छी
बात पूरी हुयी है। 15 जिस तरह से याहवे
की कही हुयी अच्छी बातें पूरी हुयी हैं, वैसे
ही तुम्हारे ऊपर मुसीबत के ऊपर मुसीबत

आएगी। इस अच्छी भूमि पर तुम बर्बाद
हो जाओगे। 16 जब तुम परमेश्वर से बन्धी
हुआ वाचा का तोड़ कर पराए देवताओं की
पूजा करने लगोगे, तब याहवे का गुस्सा तुम
पर भड़क जाएगा। इस कारणवश तुम इस
अच्छी भूमि में नष्ट हो जाओगे।”

24 शेकेम में यहोशू ने इस्राएल के
सभी गोत्रों को इकट्ठा किया। उसने
बुज़ुर्ग, खास लोग, जजों और अधिकारियों
को बुलाया। सभी वहाँ पर आए भी। 2 तब
यहोशू बोला, “इस्राएल के परमेश्वर याहवे
का कहना यह है कि पुराने समय में अब्राहम
और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे
पूर्वज परात महानद के उस पार रहते हुए
दूसरे देवताओं की पूजा किया करते थे 3 मैंने
अब्राहम को महानद के उस पार से बुलाकर
पूरे कनान में घुमाया और उसे इसहाक दिया
और वंश को बढ़ाया। 4 इसहाक को मैंने
याकूब और एसाव दिए। एसाव को मैंने
सेईर पहाड़ी जगह दी। लेकिन याकूब अपने
बेटों-पोतों के साथ मिस्र चला गया था 5 मूसा
और हारून को भेज कर उन सब कामों
से जो मैंने मिस्र में किए थे, उस देश को
सज़ा दी और फिर तुम लोगों को निकाल
लिया था। 6 तुम्हारे पुरखाओं को मैं ही मिस्र
की गुलामी से छुड़ा कर लाया था। जब वे
लाल समुन्दर पहुँचे थे तभी मिस्रियों पीछा
करते हुए समुन्दर तक पहुँचे। 7 जब इस्राएली
गिड़गिड़ाए तब मैंने उनके और तुम्हारे बीच
अन्धेरा कर दिया। उन्हें पानी में डुबा कर
मार डाला। तुम लोगों ने मेरे कामों को अपनी
आँखों देखा था। इसके बाद तुम लोग बहुत
समय तक जंगल में रहे। 8 इसके बाद मैं तुम्हें
एमोरियों के देश में ले आया था। उन्होंने
तुम से युद्ध किया। उन्हें मैंने तुम से हरवा
दिया। उनकी भूमि तुम्हें मिल गयी। वे बर्बाद
हो गए। 9 फिर मोआब के राजा सिप्पोर का
बेटा बालाक इस्राएल से लड़ा। उसने तुम्हें
शाप देने के लिए बोर के बेटे बिलाम को
बुलवाया। 10 लेकिन मैंने बिलाम की नहीं
सुनी। वह तुम्हें आशीष ही देता गया। इस
तरह मैंने तुम्हें उनके हाथों से बचाया। 11 तब
तुमने यरदन नदी पार की और यरीहो के
पास आ गए। जब एमोरी, परिज्जी, कनानी,
हित्ती, गिर्गाशी, हिब्बी, यबूसी और यरीहो
के लोग एक होकर तुम से लड़े, तब उन
सभी को मैंने तुम्हारे कब्ज़े में कर दिया।
12 तुम्हारे आगे मैंने बर्रों को भेजा था। तुम्हारे
देखते-देखते एमोरियों के दोनों राजाओं को
मैंने भगा दिया। यह मत सोचना कि यह
तुम्हारे युद्ध कौशल के कारण हुआ। 13 फिर
मैंने तुम्हें ऐसा देश दिया, जिस में तुमने मेहनत
न की थी। ऐसे नगर तुम्हें दिए, जिन्हें तुमने
आबाद नहीं किया था। इन में तुम कभी
रहे भी नहीं थे। जिन अँगूरों और जैतून का
आनन्द तुम उठा रहे हो तुमने उन्हें लगाया
भी न था। 14 इसलिए अब याहवे से डरते हुए
उनकी सेवा सच्चाई और ईमानदारी से करो।
तुम्हारे पूर्वज जिन देवताओं की पूजा करते
थे, उन से किनारा करके याहवे की आराधना
करो। 15 यदि याहवे तुम्हें पसन्द नहीं हैं तो
चुनाव तुम्हारा है। तुम चाहो तो अपने पुरूखों
के देवताओं की या एमोरियों के देवताओं
की पूजा करो।लेकिन मैंने ठान लिया है,
कि मैं केवल याहवे की ही महिमा गाऊँगा
और उन्हीं की मानूँगा। 16 लोगों ने उत्तर
दिया, “हम दूसरे देवताओं को नहीं मानेंगे,
17 क्योंकि हमारे परमेश्वर ही हैं जो हमारे
पूर्वजों को मिस्र की गुलामी से मुक्त करके
लाए थे। हमारी आँखों के सामने उन्होंने
बड़े-बड़े काम किए थे। हम जिन रास्तों से

और जिन लोगों के बीच से आए हैं, हमेशा
उन्होंने हर खतरे से हमें बचाया है। 18 हमारी
आँखों के सामने ही इस देश के एमोरी
लोगों को बाहर निकाला। इसलिए हम भी
याहवे परमेश्वर की ही सेवा करेंगे। 19 यहोशू
बोला, “परमेश्वर सभी से अलग हैं और
जलन रखने वाले भी। वह तुम्हारे अपराधों
को माफ़ नहीं करेंगे। 20 यदि तुम याहवे को
छोड़कर दूसरे देवताओं का भजन कीर्तन
करने लगोगे, तो हालांकि वह अब तक
तुम्हारा भला करते आए हैं, लेकिन तुम्हारा
नुकसान करने लगेंगे। वह तुम्हें खत्म भी कर
डालेंगे। 21 यहोशू से वे लोग बोले, “नहीं,
हम याहवे ही की सेवा करेंगे।” 22 यहोशू ने
कहा, “तुम खुद इस बात की गवाही हो,
कि तुम उनकी सेवा करोगे।” उन्होंने कहा,
“हाँ बिल्कुल ठीक।” 23 यहोशू ने फिर कहा,
“तुम अपने बीच में से दूसरे देवी-देवताओं
को हटा दो। तुम अपना मन इस्राएल के
परमेश्वर याहवे की ओर लगाओ 24 लोग
बोल उठे, “हम तो अपने परमेश्वर ही
की सेवा करेंगे और उनका कहना मानेंगे।”
25 तभी यहोशू ने उन से प्रण करवाया और
वहीं शेकेम में क्या करना है, नहीं करना है,
बताया 26 ये सभी बातें यहोशू ने परमेश्वर
के नियमशास्त्र में लिख दीं। वहाँ एक बड़ा
पत्थर चुन कर उसने बांज वृक्ष के पीछे
खड़ा कर दिया 27 तब यहोशू सभी लोगों
से कहने लगा, “सुनो यह पत्थर हम लोगों
के बीच गवाह ठहरेगा। याहवे ने अब तक
जो कुछ हम से कहा है, इस पत्थर ने सुना
है। इसलिए यह तुम्हारा गवाह होगा ऐसा न
हो कि तुम अपनी बात से मुकर जाओ।”
28 तब यहोशू ने सब को विदा किया कि
वे अपनी-अपनी जगह चले जाएँ। 29 नून का
बेटा यहोशू एक सौ दस साल का होने के
बाद मर गया 30 उस एप्रैम के पहाड़ी इलाके
में तिग्नत्सेरह में गाश नामक पहाड़ पर दफ़ना
दिया गया 31 यहोशू के जीवन काल में और
बुज़ुर्ग लोग जो उसके मरने के बाद ज़िन्दा
थे उनके जीवन काल में, जिन्हें परमेश्वर
के बड़े कामों का ज्ञान था, इस्राएली लोग
याहवे ही की सेवा करते रहे। 32 इस्राएली
लोग यूसुफ़ की हड्डियाँ मिस्र से लेकर चले
आए थे। उन्होंने उन हड्डियों को रोकेम में ही
गाड़ दिया था इसलिए यूसुफ़ के बच्चों की वह
ज़मीन हो गयी 33 हारून के बेटे एलीआजार
को एप्रैम के पहाड़ी इलाके में दफ़नाया गया।
वह ज़मीन उसके बेटे पीनहास के नाम पर
गिबत्पीनहास कहलायी और वह उसी की
हो गयी।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com